RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹ : 30/-

प्रेरणा विचार

मासिक
कार्तिक-मार्गशीर्ष, विक्रम संवत् 2082 (नवम्बर -2025)
पृष्ठ-36, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम

भारत की बढ़ती वैश्विक भूमिका

त्रिपुरासुर वध@देव दीपावली

कार्तिक/मार्गशीर्ष

वि.सं. २०८२

शक सं. १९४७

नवम्बर २०२५

हेमंत ऋतु

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
३० मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष दशमी						कंस वध, प्रबोधिनी/देवोत्थान एकादशी १ कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी
तुलसी विवाह २ कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	प्रदोष व्रत ३ कार्तिक शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	वैकुण्ठ चतुर्दशी, मणिकर्णिका स्नान, वासुदेव बलवंत फड़के जयंती ४ कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	देव दीपावली, श्री गुरुनानक जयंती, कार्तिक स्नान पूर्ण ५ कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	६ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	विपिन चन्द्र पाल जयंती "लाल, बाल, पाल" ७ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष द्वितीया	श्री गणेश चतुर्थी व्रत ८ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष तृतीया
९ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष चतुर्थी	१० मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष पंचमी	११ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सप्तमी	श्री कालभैरव जयंती १२ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष अष्टमी	१३ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष नवमी	१४ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष दशमी	उत्पन्ना एकादशी, भगवान् बिरसा मुंडा जयंती १५ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष एकादशी
वृश्चिक संक्रान्ति १६ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष द्वादशी	प्रदोष व्रत १७ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	१८ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	१९ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	२० मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष अमावस्या	२१ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	२२ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष द्वितीया
२३ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष तृतीया	श्री गणेश चतुर्थी व्रत २४ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष चतुर्थी	श्री राम सीता विवाह पंचमी २५ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष पंचमी	चम्पा षष्ठी २६ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष षष्ठी	२७ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष सप्तमी	२८ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष अष्टमी	२९ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष नवमी

प्रेरणा विचार

वर्ष -3, अंक - 11

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
अनिल त्यागी

प्रबंध निदेशक
बिजेन्द्र कुमार गुप्ता

सलाहकार मंडल
श्याम किशोर

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62,
नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851
मोबाइल : 9354133708,9354133754
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में

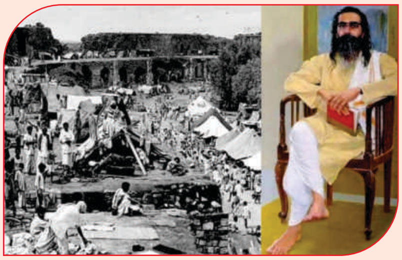

1947 में पाकिस्तानी षड्यंत्र को विफल करने में संघ की भूमिका -5

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और नारी उत्थान शताब्दी की प्रेरक यात्रा -13

भारत की बढ़ती वैश्विक भूमिका -17

भारत में बढ़ती मुस्लिम आबादी कारण और चुनौतियां -26

संघ जैसा मैंने देखा 08

विशेष अवसरों पर स्वयंसेवकों द्वारा किए गए कार्य 11

स्वदेशी : भारत की अर्थनीति और संस्कृति का जीवंत प्रतीक....15

भीषण खतरे की चेतावनी है चरम मौसमी बदलाव....20

कोडेड कमांडर्स : कृत्रिम बुद्धिमत्ता नए जनरल के रूप में....22

वर्तमान वैश्विक नेतृत्व में विश्व कल्याण के भाव का अभाव है....24

उत्सवों में प्रकृति पौराणिक परंपरा और लोकजीवन का संगम....28

पुस्तक समीक्षा : रामबहादुर राय होने का अर्थ समझाती एक किताब....30

2025 के नोबेल पुरस्कार खोज, साहस और मानवता का संगम....32

पंच परिवर्तन स्टोरी....33

विकसित भारत के लिए आवश्यक है व्यापक राष्ट्रीय सुरक्षा नीति

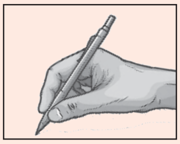

रामनगरी अयोध्या ने इस बार फिर स्वयं के ही कीर्तिमान को तोड़ते हुए सरयू तट पर एक साथ सर्वाधिक 26.17 लाख दीये जलाने का नया कीर्तिमान स्थापित किया है। इसे प्रकृति की योजना ही कहेंगे कि, जिस प्रदेश की सरकार अयोध्या में रामभक्तों का खून बहाती थी, बदले नेतृत्व में वही सरकार उसी अयोध्या में प्रतिवर्ष दीपोत्सव मनाती है और दीयों की बढ़ी संख्या का लक्ष्य भी साधती है।

भारतीयों ने जिस उमंग, उत्साह और दूरदर्शिता के साथ मर्यादा पुरषोत्तम श्रीराम द्वारा आसुरी शक्तियों का मर्दन कर, चौदह वर्ष बाद रामराज्य की दृष्टि के साथ अयोध्या लौटने का पर्व दीपावली मनाया, उससे जन-जन के मन-मस्तिष्क में विकसित भारत के बीज का अंकुरण स्पष्ट दिखाई देता है। रामनगरी अयोध्या ने इस बार फिर स्वयं के ही कीर्तिमान को तोड़ते हुए सरयू तट पर एक साथ सर्वाधिक 26.17 लाख दीये जलाने का नया कीर्तिमान स्थापित किया है। इसे प्रकृति की योजना ही कहेंगे कि, जिस प्रदेश की सरकार अयोध्या में रामभक्तों का खून बहाती थी, बदले नेतृत्व में वही सरकार उसी अयोध्या में प्रतिवर्ष दीपोत्सव मनाती है और दीयों की बढ़ी संख्या का लक्ष्य भी साधती है। वर्ष 2017 में 1.71 लाख दीयों से आरंभ होकर, 2018 में 3. 01 लाख, 2019 में 4.04 लाख, 2020 में 6.06 लाख, 2021 में 9.41लाख, 2022 में 15.76 लाख, 2023 में 22.23 लाख, 2024 में 25.12 लाख और इस बार यह संख्या 26.17 लाख जा पहुंची है। यह आशा के अनुरूप ही है कि आदत से लाचार वो आसुरी शक्तियां जिन्होंने 500 वर्षों तक भारतीयों के रोम-रोम में बसे श्रीराम के अस्तित्व को नकारने और नष्ट करने का कुत्सित प्रयास किया, इस दैवीय कार्य को नहीं पचा पाए। विडंबना है कि उन दीयों को भी इनका कोपभाजन बनना पड़ा जो अंतर्मन के साथ ही बाहरी दुनिया से अंधकार मिटाने के लिए सतत संघर्षरत रहने की प्रेरणा देते हैं। वस्तुतः दीया अंधकार से भी लड़ता है और उन आसुरी विचारों से भी जो दुनिया को अंधकार, अज्ञान और आतंक के गर्त में धकेलना चाहते हैं। वह अंधकार से लड़ता हुआ अपने को तिल-तिल खपाते हुए असंख्य नए दीयों को रोशन करता है और दीपमालिका बनकर पृथ्वी पर सूरज के निम्न भावों का प्रतिनिधित्व करता है–

हमसे छुपता है वो कोई दूसरी दुनिया रोशन करने,
पूरब से विदा लेकर पश्चिम में निकलने ।

जब वो आफताब बन पश्चिम के अंधेरे मिटाता है,
दुनिया हमारी महताब से रोशन कराता है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का संदेश कि, "सत्य परेशान हो सकता है परन्तु इसे परास्त नहीं किया जा सकता, सत्य की यह नियति है कि उसे विजयी होना ही है", भारतीय समाज को दिशा देने वाला है। इतिहास साक्षी है कि राष्ट्र की नीतियों से जब-जब श्रीराम के आदर्श ओझल हुए, हमनें दासता झेली, सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास देखा और राष्ट्र का खंड-खंड विभाजन देखा। जब देश के नेतृत्व ने श्रीराम के जीवन से अन्याय के खिलाफ लड़ने के संकल्प का अनुसरण किया तो ऑपरेशन सिंदूर से पाकिस्तानी लंका भी ध्वस्त हुई और दुनिया को मर्यादित आचरण का परिचय भी मिला। इसी नीति से माओवादी आतंक भी अब अंतिम सांसें गिन रहा है, जिसके खात्मे से सुदूर क्षेत्रों के जन-जन का मंगल हो सकेगा। इस बार दीपावली की एक विशेषता यह रही कि लोगों ने सरकार के 'वोकल फॉर लोकल' और 'स्वदेशी दिवाली' जैसे आह्वानों के अनुरूप विदेशी सामानों से दूरी बनाई। परिणामतः, नवरात्रि से दिवाली तक के आंकड़ों के अनुसार पिछली बार के 4.25 लाख करोड़ के मुकाबले इस बार 6.05 लाख करोड़ का कारोबार हुआ, जिसमें 87 प्रतिशत उपभोक्ताओं ने भारतीय सामान चुना। यह दुनिया के स्वयंभू दादाओं को एक जवाब है।

वर्ष 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा और सांस्कृतिक एकता पर जोर देना होगा, जिसमें अवैद्य मतांतरण और धार्मिक समूहों में जनसंख्या बड़ी चुनौती हैं। हालिया प्रकरण में बरेली में पादरी द्वारा कोचिंग केंद्र की आड़ में रूपये, नौकरी तथा शादी जैसे प्रलोभन देकर तथा बलरामपुर क्षेत्र में छांगुर बाबा उर्फ जलालुद्दीन द्वारा भारी संख्या में हिंदुओं का मतांतरण तब और अधिक चिंताजनक बन जाता है जब इन गिरोह के सदस्यों की 40 से अधिक इस्लामिक देशों की यात्राएं हुई हों और विदेश से 100 करोड़ रूपये से अधिक की फंडिंग के सुबूत मिले हों। आए दिन प्रभावशाली लोगों के नित्यप्रति उजागर होते भ्रष्टाचार के कारनामे चाहे वो पंजाब के पुलिस अधिकारी हों या उच्च न्यायालय के न्यायधीश, जहां विकसित भारत के जहाज को डुबाने में सक्षम हैं वहीं राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी चुनौती हैं। निःसन्देह, व्यापक एवं प्रामाणिक राष्ट्रीय सुरक्षा नीति विकसित भारत की लक्ष्य सिद्धि में अहम भूमिका अदा करेगी। ■

1947 में पाकिस्तानी षड़यंत्र को विफल करने में संघ की भूमिका

अशोक कुमार सिन्हा
उपाध्यक्ष, विश्व संवाद केन्द्र, लखनऊ

सन् 1946 के मध्य तक कश्मीर घाटी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाएं अपने यौवन पर पहुंच चुकी थीं। चढ़ती उम्र के पढ़े-लिखे जवान संपर्क में आने लगे थे। शाखाओं पर आने वाले स्वयंसेवकों में अधिकांश कश्मीरी हिंदू नवयुवक ही होते थे। श्री गुरुजी का अटर भारत का प्रवास चल रहा था, अतः श्रीनगर में भी एक विशाल जनसभा आयोजित करने की योजना बनाई गई सभी स्वयंसेवक कार्यकर्ता प्रसन्नता से झूम उठे। यह स्वाभाविक ही था। जिस कश्मीर में 90 प्रतिशत मुसलमान समाज हो, सदियों से हिंदू समाज आस्थाविहीन हो कर चल रहा हो, धार्मिक स्थानों की पवित्रता नष्ट हो चुकी हो और हिंदू समाज स्वाभिमान शून्य होकर जी रहा हो, उस स्थान पर एक अखिल भारतीय शक्तिशाली हिंदू संगठन के नेता का आना एक बहुत बड़ी बात थी। डी.ए.वी. कॉलेज श्रीनगर के प्रांगण में कार्यक्रम हुआ। एक हजार से अधिक स्वयंसेवक पूर्ण गणवेश में उपस्थित हुए। नगर के गणमान्य व्यक्तियों को निमंत्रित किया गया था। वे पूरी निष्ठा एवं उत्साह से आए। श्री गुरुजी ने हिन्दू समाज की एकता पर बल देते हुए देशद्रोहियों की हरकतों से सतर्क रहने और उन्हें एकजुट हो कर निरस्त करने का आह्वान किया। इस कार्यक्रम से कश्मीर घाटी में एक विशेष प्रकार के उत्साह का संचार हुआ, जिसका स्पष्ट परिणाम 1947 के पाकिस्तानी आक्रमण के समय दिखाई पड़ा। देश विभाजन के समय संघ के इन तरुण स्वयंसेवकों ने कश्मीर की रक्षा के लिए जो बलिदान दिए, वे भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य हैं।15 अगस्त 1947 को प्रातः श्रीनगर में पाकिस्तानी तत्वों नें गड़बड़ी करनी प्रारंभ कर दी। सभी सरकारी भवनों पर पाकिस्तान के हरे रंग के झंडे फहरा दिए गए। संघ के देशभक्त स्वयंसेवकों ने इस चुनौती को स्वीकार किया। तुरंत संघ कार्यालय पर योजना बनी। दस बजे तक अमीराकदल के पुल के पास हजारों स्वयंसेवक एवं हिन्दू लोग इकट्ठे हो गए। इनका राष्ट्रप्रेम देखने लायक था। कश्मीरी पंडितों को डरपोक और कायर कहने वाले तथाकथित चौधरियों ने भी उस दिन दांतो तले उंगली दबा ली। देखते ही देखते पाकिस्तान के झंडे उतार फेंके गए और नगर की प्रमुख सड़कों पर विशाल जुलूस निकाला गया। पाकिस्तानी तत्वों को ललकारा गया। सारा वातावरण भारत माता की जय के नारों से गुंजायमान हो उठा। हिंदू समाज का हौसला बढ़ा और महाराज हरि सिंह को भी संघ की शक्ति और भक्ति का रोमांचक आभास हुआ।

संघ के दो प्रमुख प्रचारकों श्री हरीश भनोत तथा श्री मंगलसेन ने पाकिस्तानी अफसरों से संबंध स्थापित किए और कई मास तक मुसलमान बन कर पाकिस्तान की सैनिक गतिविधियों एवं संभावित आक्रमण की पूरी सूचना श्री बलराज मधोक को दी। श्री बलराज मधोक उस समय श्रीनगर के डी. ए. वी. कॉलेज में इतिहास के प्राध्यापक थे। वे जम्मू-काश्मीर राज्य में संघ में सक्रिय थे तथा संघ कार्य के प्रमुख थे। इन्होंने आक्रमण के मार्ग और तिथि तक की जानकारी दी। महाराजा हरि सिंह ने बलराज मधोक को बुलाया। श्रीनगर में महाराजा के महल में उनकी भेंट हुई। सारी जानकारी प्राप्त होने के बाद महाराजा नें संघ के 200 स्वयंसेवक मांगे ताकि उन्हें शस्त्र दे कर नगर की रक्षा व्यवस्था का दायित्व सौंपा जा सके। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए श्री मधोक ने दूसरे दिन प्रातः दो सौ स्वयंसेवक उपस्थित करने का आश्वासन दे दिया। रात्रि दो बजे स्वयंसेवकों को आकस्मिक सूचना घरों में भेजी गई - प्रातः 5 बजे आर्यसमाज मंदिर पहुंचो। प्रातः 5 बजे दो सौ स्वयंसेवक वहां उपस्थित थे सभी कॉलेज के छात्र थे और देश पर बलिदान होने की भावना लेकर घर से आए थे। सामूहिक गणगीत हुआ। संघ की प्रार्थना की गई। थोड़ी देर बाद फौजी ट्रक आए और इन तरुणों को ले कर बादामीबाग छावनी में पहुंच गए। यहां कुछ सैनिक तैयार खड़े थे। उन्होंने तुरंत स्वयंसेवकों को रायफल चलाना सिखाना प्रारम्भ कर दिया। सायंकाल तक वह युवक मोर्चे पर जा पहुंचे। भारतीय फौजों के आने तक दो दिन तक इन स्वयंसेवक सिपाहियों ने

पाकिस्तानी फौज को रोके रखा। इतिहास इस अद्भुत बलिदानी घटना को सब जानते हैं परंतु बोलता कोई नहीं। शेख अब्दुल्ला भी जानता था। वही शेख अब्दुल्ला श्रीनगर पर आक्रमण की जानकारी मिलते ही कश्मीरी जानता को छोड़ कर परिवार सहित कश्मीर से भाग गया था। घाटी को सम्भाला और बचाया था पहले संघ के इन स्वयंसेवकों ने और बाद में भारतीय सेना ने, भगोड़े शेख अब्दुल्ला ने नहीं ।

1947 में ही स्वाधीनता मिलने के बाद पूरा देश उथल-पुथल के दौर से गुजर रहा था। इनमें जम्मू-कश्मीर का हाल सबसे खराब था। वहां राजा हिन्दू था, पर अधिकांश प्रजा मुसलमान। शेख अब्दुल्ला अपनी अलग ढपली बजा रहा था। प्रधानमंत्री नेहरू का हाथ उसकी पीठ पर था। पूरे देश के एकीकरण का भार सरदार पटेल पर था; लेकिन जम्मू-कश्मीर में नेहरू जी अपनी चला रहे थे।

24 अक्तूबर को विजयादशमी का पर्व था। हर साल इस दिन महाराजा की शोभायात्रा श्रीनगर में होती थी। हिन्दुओं के साथ मुसलमान भी उत्साह से इसमें शामिल होते थे। पाकिस्तान समर्थकों ने इस शोभायात्रा पर हमला कर राजा के अपहरण या हत्या का षड्यंत्र रचा। इससे वे पूरे राज्य में अफरातफरी मचाना चाहते थे। उस दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सैकड़ों कार्यकर्ता देश की रक्षा के लिए प्रयासरत थे। उन्हें इस षड्यंत्र का पता लग गया।

इससे एक दिन पूर्व बारामूला और उड़ी के मार्ग से सैकड़ों पाकिस्तानी सैनिक कबाइलियों के वेष में श्रीनगर की ओर चल दिये थे। उनकी योजना 24 अक्तूबर को श्रीनगर पर कब्जा करने की थी। शोभायात्रा स्थगित करने से राज्य में गलत संदेश जाने का भय था। अतः राज्य प्रशासन ने संघ से संपर्क कर एक योजना बनायी। इसके अनुसार 24 अक्तूबर को सुबह छह बजे तक 200 युवा स्वयंसेवक वजीरबाग के आर्य समाज मंदिर में पहुंच गये।

वहां उन्हें पूरी योजना समझाई गयी। इसके बाद संघ प्रार्थना हुई। फिर उनमें से

कश्मीरी पंडितों को डरपोक और कायर कहने वाले तथाकथित चौधरियों ने भी उस दिन दांतो तले उंगली दबा ली। देखते ही देखते पाकिस्तान के झंडे उतार फेंके गए और नगर की प्रमुख सड़कों पर विशाल जुलूस निकाला गया। पाकिस्तानी तत्वों को ललकारा गया। सारा वातावरण भारत माता की जय के नारों से गुंजायमान हो उठा। हिंदू समाज का हौसला बढ़ा और महाराज हरि सिंह को भी संघ की शक्ति और भक्ति का रोमांचक आभास हुआ ।

150 युवक सैन्य वाहन से बादामी बाग छावनी भेज दिये गये। वहां अगले कुछ घंटे तक उन्हें राइफल चलाना सिखाया गया। पहले नकली और फिर असली कारतूसों से निशानेबाजी का अभ्यास हुआ। सैन्य अधिकारी उन्हें सीमा पर भेजना चाहते थे। संघ के स्वयंसेवक इसके लिए तैयार थे; पर गहन विचार विमर्श के बाद उन्हें शोभायात्रा की सुरक्षा में तैनात कर दिया गया।

शाम को पांच बजे शोभायात्रा शुरू हुई। सबसे आगे रियासत का प्रमुख बैंड था। उसके पीछे सौ घुड़सवार सुंदर वेशभूषा में अपने भालों पर रियासत का लाल तथा केसरी ध्वज लिये आठ-आठ की पंक्तियों में चल रहे थे। उसके पीछे छह घोड़ों की एक सुंदर और सुसज्जित बग्घी पर राजा, युवराज और उनके दो अंगरक्षक बैठे थे। जरी की अचकन और केसरी पगड़ी में पिता-पुत्र बहुत सुशोभित हो रहे थे। उसके पीछे की बग्घियों में राज्य मंत्रिमंडल के सदस्य तथा कुछ बड़े जागीरदार थे। उनके पीछे फिर सौ घुड़सवार थे। शोभायात्रा धीरे-धीरे अपने निर्धारित मार्ग पर बढ़ रही थी।

जहां से भी यह शोभायात्रा गुजरती, लोग उत्साह से महाराजा की जय के नारे लगाते थे। राज्य की पुलिस के साथ ही साधारण वेशभूषा में 150 स्वयंसेवक भी पूरे रास्ते पर तैनात थे। झेलम नदी के पुल से होकर शोभायात्रा अमीराकदल के चौक में पहुंची। वहां दर्शकों की अपार भीड़ थी। जैसे ही महाराजा की सवारी चौक के बीच में पहुंची, दर्शकों में से किसी ने काले रंग की गेंद जैसी कोई चीज महाराजा पर फेंकनी चाही। वह वस्तुतः एक बम था; पर तभी दर्शकों में खड़े एक युवक ने उसका हाथ पकड़ लिया। दो युवाओं ने उस बमबाज को गले से पकड़ा और भीड़ से बाहर खींच लिया। आम लोग शोभायात्रा देखने में व्यस्त थे। उन्हें कुछ पता नहीं लगा।

शोभायात्रा अपने निर्धारित समय पर राजगढ़ के महल में पहुंच गयी। वहां आठ बजे दरबार शुरू हुआ, जिसमें कुछ लोगों को उपहार तथा उपाधियां आदि दी गयीं। नौ बजे महाराजा और उनके परिजन अपने आवास पर लौट गये। इस प्रकार स्वयंसेवकों ने एक भारी षड्यंत्र को विफल कर दिया। इसके दो दिन बाद राजा के हस्ताक्षर से जम्मू-कश्मीर भारत का अंग बन गया।

स्मरणीय है कि इसके पूर्व महाराजा हरिसिंह के दरबारियों, सहयोगियों और मंत्रिपरिषद के मंत्रियों ने पूरा जोर लगाया कि राष्ट्र के हित में जम्मू-कश्मीर का विलय भारत में कर देना चाहिए। सरदार पटेल और महात्मा गांधी जैसे व्यक्तियों ने भी प्रयास किया था परंतु महाराजा तैयार न हुए । वे नेहरू की सत्ता स्वीकार नहीं करना चाहते थे। उधर पाकिस्तान की फौज कश्मीर के द्वार पर आ पहुंची ।राजनेताओं के प्रयास विफल हो चुके थे। समय की नाजुकता बढ़ती जा रही थी। ऐसी परिस्थिति में सरदार पटेल ने व्यक्तिगत तौर पर मेहरचंद महाजन द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री माधव सदाशिव गोलवरकर को विशेष संदेश भेज कर आग्रह किया कि महाराजा को विलय करने के लिए तैयार करने में वे अपने प्रभाव का प्रयोग करें।श्री गुरुजी तुरंत अपने राष्ट्रीय कर्तव्य की पूर्ति के लिए अपने समस्त पूर्वनिर्धारित कार्यक्रमों को स्थगित करते हुए विमान द्वारा नागपुर से नई दिल्ली और नई दिल्ली से श्रीनगर, दिनांक 17 अक्टूबर 1946 को पहुँचे। श्री प्रेम चंद्र डोगरा और श्री मेहरचंद

महाजन के प्रयास से श्री गुरुजी की भेंट 18 अक्टूबर 1947 को महाराजा हरिसिंह से हुई। भेंट के समय 15—16 वर्षीय युवराज कर्ण सिंह जांघ की हड्डी टूटने से प्लास्टर में बंधे लेटे हुए थे। मेहर चंद्र महाजन भेंट के समय उपस्थित थे। राष्ट्र की अखंडता के लिए यह एक ऐतिहासिक भेंट थी। जिस महाराजा पर देश के अनेक राष्ट्रीय नेताओं का कुछ भी असर न हुआ, उस महाराजा हरि सिंह ने एक साधारण वेश वाले राष्ट्रीय तपस्वी के आगे सिर झुका दिया। उसे अपने राष्ट्र की रक्षा और धर्म का महत्व समझ में आ गया। श्रीगुरुजी ने स्वयंसेवकों को जम्मू – कश्मीर की रक्षा के लिए रक्त की अंतिम बूंद तक बहाने का निर्देश दे कर चले गए। संघ और स्वयंसेवकों ने इस प्रकार पाकिस्तान की कश्मीर हड़पने की एक और चाल विफल कर दी थी।

सन् 1947 में ही कश्मीर पर अधिकार करने की प्रबल कुचालों के वशीभूत हो कर पाकिस्तानी सैनिकों ने कबाइलियों के भेष में कोटली नामक कस्बे पर आक्रमण कर दिया था। भारतीय सेना तब तक काश्मीर पहुंच चुकी थी। कोटली की संकरी घाटी में नाले के उस पार पाकिस्तानी सेना के फायरिंग रेंज में भारतीय वायुसेना के विमानों ने जल्दीबाजी में गोलाबारूद, आम्युनेशन और हथियारों से भरे लोहे के बड़े- बड़े बक्से गिरा दिए थे। उसे उठा कर लाना था। कौन लाएगा? यह प्रश्न उठा। पाकिस्तान लगातार एलएमजी गनों से फायरिग झोंक रहा था। भारतीय सैनिकों की संख्या बहुत कम थी। यदि बक्से उठाकर लाए नहीं जाते तो भारतीय सैनिकों के गोला बारूद खत्म हो रहे थे। अपने सैनिकों के निहत्थे मरने की आशंका थी। कोटली का सेना टुकड़ी का कमांडर सोच-विचार कर तुरंत स्थानीय संघ कार्यालय पहुंचा जहाँ उसकी भेंट पंजाब नेशनल बैंक के स्थानीय शाखा के मैनेजर श्री चंद्र प्रकाश जी, जो कोटली संघ शाखा के नगर कार्यवाह भी थे, उनसे हुई। उन्होंने सैनिक कमांडर की बात और समस्या ध्यान से सुनी और पूछा की कितने स्वयंसेवक चाहिए। सैनिक कमांडर बोला-आठ से काम चल जाएगा। चन्द्र प्रकाश जी, जो देश पर बलिदान होने के लिए भावुक हो रहे थे, ने कहा "ठीक है एक मैं हूं – बाकी सात को मैं आधे घंटें में ले कर आता हूं। आप यहां निश्चिंत हो कर बैठे। इतना कह कर चंद्रप्रकाश जी बड़ी फुर्ती से शहर में आए। निर्देश मिलते ही तीस से उपर ही नौजवान स्वयंसेवक तैयार हो कर आ गए। चंद्रप्रकाश जी को उनमें से सात का चुनाव करना कठिन हो रहा था क्योंकि सभी चलने को उद्दत हो रहे थे। अंत में अधिकारी की आज्ञा पर सात छांट लिए गए बाकी ने अनुशासनवश रुककर अपने आठों स्वयंसेवकों को भावभीनी विदाई दी। सब इस विदाई का अर्थ समझते थे इस लिए मौन विदाई थी। चन्द्रप्रकाश जी तुरंत प्रतीक्षा कर रहे सैनिक कमांडर के पास पहुंचे तथा तुरंत मोर्चे पर पहुँच गए। कमांडर ने उन्हें पाकिस्तानी सेना की नजरों से बच कर बारूद की पेटियों तक पहुंचने, उन्हें उठाने और फिर सभी बक्सों को अपनी सैनिक टुकड़ी तक पहुंचाने की योजना समझाई। सारी योजना को भलीभाति समझ कर आठों स्वयंसेवक रेंगते, फिसलते और गिरते हुए उस नाले के करीब पहुंच गए जहां उस पार बारूद के बक्शे पड़े हुए थे। नाला तो पानी से भरा हुआ था और बहाव भी तेज था । स्वयंसेवकों ने नाला पार किया । एक-एक स्वयंसेवक ने बक्सा उठाया और पुनः नाले को पार करने लगे। लौटते समय चंद्रप्रकाश जी और वेदप्रकाश को गोलियां लग गई क्योंकि नाले में हलचल से पाकिस्तानी आक्रमणकारियों को खबर लग गई थी। छह स्वयंसेवक तो बक्से के साथ वापस आ गए परंतु वे पुनः अपने साथियों को वापस लाने के लिए नाला पार कर उनके शरीर को पीठ पर बांध कर वापस आने लगे। दुर्भाग्यवश दो और स्वयंसेवकों को कनपटी पर गोली लगी। अब जीवित चार नौजवानों नें चार शवों को लादा और नाला पार कर अपने सैनिकों के पास सुरक्षित लौट आए। आठ जीवित गए थे, चार ही जीवित लौटे। सबकी आंखे नाम थी। लक्ष्य पूरा तो हुआ परंतु चार स्वयंसेवक बलिदान हो गए। नगरवासियों के समक्ष चार चितायें जलाई गई परंतु कोटली नगर की रक्षा हो गई। पाकिस्तानी षड्यंत्र विफल हुआ।

इसी घटना के कुछ समय बाद ही कोटली नगर से 20 किलोमीटर दूर अटर पश्चिम दिशा में पलंधरी से समाचार आया कि 1200 सौ हिन्दू सिखों को दुश्मन ने घेर लिया है तथा उनका जीवन खतरें में है। सेना के अधिकारियों ने घटना की गंभीरता को समझा परंतु उनके पास केवल नगर की सुरक्षाभर के लिए ही सैनिक थे। संघ के स्वयंसेवकों ने सैनिक कमांडरों को समझाया कि हमारे लगभग एक सौ स्वयंसेवक आप की सहायता के लिए तत्पर हैं आप तुरंत एक टुकड़ी सेना भेज कर घिरे भारतीयों की जान बचाइए। तुरंत सेना नें 31सैनिक लेफ्टिनेंट ईश्वर सिंह के नेतृत्व में घटनास्थल को रवाना किये साथ में 100 के लगभग स्वयंसेवक भी थे। कोटली के मुसलमान तहसीलदार ने गद्दारी करते हुए इन सैनिकों की रवानगी की गुप्त सूचना पाकिस्तानी सेना को भेज दी। पलंधरी पहुंचने पर सेना व स्वयंसेवकों का सामना पहाड़ी पर चढ़ते समय पाकिस्तानियों से गोलीबारी के साथ हो गया। दुश्मन ऊंचाई पर था। अनपेक्षित आक्रमण और गोलाबारी के बीच भी सैनिकों और स्वयंसेवकों ने अनेक दुश्मनों को मार डाला। साधनों की कमी होने पर भी कई घंटों तक संघर्ष चला। एक भी सैनिक या स्वयंसेवक ने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। अनेक शत्रुओं को यमलोक पहुंचा कर ये सब भी देश की सेवा में एक-एक कर बलिदान हो गए। सैनिकों और स्वयंसेवकों के रक्त से लाल पलनधरी की इस भूमि की मिट्टी को आज भी मस्तक पर लगाने पर हृदय में बलिदानी उमगें हिलोरें लेने लगती हैं।

भारत की सेना जब अल्प समय में सूचना पा कर हवाई मार्ग से श्रीनगर हवाईअड्डे पहुंचने की योजना बना रही थी, तब उन्हें सूचना मिली कि वहां की हवाई पट्टी पर हालात बहुत खराब है। रनवे को जगह-जगह जेहादी तत्वों के द्वारा क्षतिग्रस्त कर दिया गया है। सेना ने कश्मीर में संघ से संपर्क किया और स्वयंसेवकों की सहायता से तत्काल हवाईपट्टी की मरम्मत की और उसी दिन भारतीय सैनिक हवाईजहाज से श्रीनगर हवाईअड्डे पहुंचे। इस प्रकार जिहादियों का यह षड्यंत्र भी संघ की मदद से विफल हुआ था। ■

संघ जैसा मैंने देखा

'संघ जैसा मैंने देखा' विषय की इस कड़ी में हमारे मध्य श्रीमान कलराज मिश्र जी हैं जो पूर्व में केंद्रीय मंत्री, हिमाचल और राजस्थान के पूर्व राज्यपाल तथा जनसंघ से लेकर संघ तक सक्रिय कार्यकर्ता रहें। बाल्यकाल से संघ से जुड़े मिश्र जी ने प्रचारक के रूप में संगठन को नई दिशा दी। संघ के शताब्दी वर्ष पर प्रस्तुत है श्याम किशोर सहाय द्वारा लिया गया साक्षात्कार का मुख्य अंश-

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपनी 100 वर्षों की यात्रा पूरी कर ली है। इस लम्बी यात्रा में आपका भी गहरा जुड़ाव रहा है। इस ऐतिहासिक अवसर पर आप क्या अनुभव कर रहे हैं?

मैं उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के सैदपुर तहसील के छोटे से गाँव मलिकपुर का रहने वाला हूं। मेरा बचपन सादगी, संस्कार और देशभक्ति के वातावरण में बीता। मेरे बड़े भाई संघ से जुड़े, और तभी हमारे घर में प्रचारकों का आना-जाना शुरू हुआ। माँ स्वयं उनके लिए भोजन बनातीं। गाँव में संघ के कार्यकर्ताओं के प्रति गहरी श्रद्धा थी। लोग कहते, 'ये कार्यकर्ता तो भूख-प्यास की परवाह किए बिना भारत माता की सेवा में लगे रहते हैं।' बचपन में जब भी शाखा लगती, मैं भी पहुँच जाता। 'आओ हम सब मिलकर गाएँ, जग जननी के गान...' जैसे गीतों और संघ की प्रार्थना ने मन पर अमिट छाप छोड़ी। तभी 'भारत माता हमारी माता है' का भाव भीतर गहराई से बस गया। आजादी के बाद जब 1948 में संघ पर प्रतिबंध लगा, तब हमारे घर में कई दिनों तक दो वरिष्ठ प्रचारक माननीय भेड़ी जी और उनके सहयोगी रहे। वह हमारे परिवार के लिए गौरव का समय था और तभी मेरे मन ने संघ के प्रति सम्मान और बढ़ गया। आठवीं के बाद जब मैं वाराणसी के सेंट्रल हिंदू स्कूल पहुँचा, तो संघ से मेरा जुड़ाव और गहरा हुआ। वहाँ देखा कि इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र साइकिल से लंबा रास्ता तय कर शाखा में पहुंचते हैं। यह समर्पण देखकर मैं प्रभावित हुआ। तभी से मेरा नियमित रूप से शाखा जाना शुरू हुआ। संघ ने मुझे न केवल प्रेरणा दी, बल्कि भारत माता की सेवा का सच्चा अर्थ भी समझाया।

जब देश आजादी की दहलीज पर था और संघ चुनौतियों से जूझ रहा था, उस समय आपने प्रचारक जीवन अपनाने का निर्णय कैसे लिया?

जब मैं संघ की शाखा में नियमित रूप से जाने लगा, तब मेरे मन में एक अद्भुत जोश और देशभक्ति का जुनून जागा कि 'भारत माता की सेवा सर्वोच्च है, देश सबसे प्रथम है।' कक्षा 10—11 में ही मेरे मन में यह निश्चय हुआ कि मेरा संपूर्ण जीवन संघ कार्य को समर्पित होगा। शुरुआत में मेरे बड़े भाई संघ के कार्यों में सक्रिय थे, लेकिन जब वे नौकरी में चले गए, तब मैं अकेले ही संघ के विभिन्न कार्यक्रमों और विस्तार कार्यों में सक्रिय रहने लगा। संघ की आईटीसी ट्रेनिंग में शामिल हुआ, छुट्टियों में घर कम जाता और पढ़ाई और कार्य के बीच अनेक संघर्षों का सामना किया। वाराणसी में रहते हुए मुझे कई प्रेरणादायक व्यक्तित्वों से मिलने का अवसर मिला, शंकरराव तत्ववादी जी और वासुदेव खेर जी जैसे लोग, जिन्होंने स्वयं विद्यार्थी जीवन से ही प्रचारक जीवन अपनाया, मेरे लिए अत्यंत प्रेरणादायक रहे। धीरे-धीरे मैं संघ की योजना के अनुसार कार्य करने लगा। संघालय हमारे लिए केवल कार्यालय नहीं, बल्कि पवित्र केंद्र-बिंदु था। वहां सफाई, भोजन की व्यवस्था, बर्तन धोना सब काम स्वयं करना हमारी जिम्मेदारी थी। प्रचारकों का समर्पण, अनुशासन और पारिवारिक भाव ने मेरे मन में उनके प्रति गहरा स्नेह और लगाव पैदा किया। सबसे बड़ी परीक्षा तब आई जब इंटरमीडिएट पूरा करने के बाद मुझे ओटीसी (ऑफिसर ट्रेनिंग कैंप) के लिए भेजा गया। घरवालों ने विरोध किया, पर मेरा निश्चय अडिग था। प्रशिक्षण पूरा करके लौटने के बाद भी मैंने अपने मार्ग से विमुख नहीं होने का संकल्प रखा। यही अटूट निष्ठा और संघर्ष मेरे जीवन की सबसे बड़ी शक्ति बनी।

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में गुरुजी गोलवलकर जी का प्रभाव गहरा था। क्या उनके विचारों ने आपके जीवन को भी प्रभावित किया?

मेरा सौभाग्य रहा कि मैं वाराणसी में था, जहां परम पूज्य गुरुजी गोलवलकर जी वर्ष में दो-तीन बार अवश्य आते थे। मुझे संघ के वरिष्ठ अधिकारियों के माध्यम से उनकी सेवा में रहने का अवसर मिला। उनका व्यक्तित्व अत्यंत आध्यात्मिक, तेजस्वी और प्रभावशाली था। एक घटना आज भी याद है। मैं काशी विद्यापीठ में पढ़ता था, जहां के कुलपति प्रो. राजाराम शास्त्री जी अकसर संघ की आलोचना करते थे। एक बार उन्होंने मुझसे पूछा कि इतने छात्र शाखा में क्यों जाते हैं। मैंने उत्तर दिया, 'गुरुजी का व्यक्तित्व ही लोगों को आकर्षित करता है, यही संघ की शक्ति है।' बाद में मैंने उन्हें गुरुजी से मिलने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने प्रारंभ में मना किया, लेकिन डॉ. के.एल. शर्मा जी ने गुरुजी से भेंट की और प्रभावित होकर संघ कार्य में सहयोग देने लगे। एक मुलाकात ने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी। जब मेरी पढ़ाई पूरी हुई, विश्वविद्यालय के प्राध्यापक चाहते थे कि मैं अध्यापक बन जाऊँ। लेकिन मैंने निर्णय लिया कि मेरा मार्ग प्रचारक जीवन है। माता से अनुमति लेकर मैं संघ कार्य के लिए वाराणसी लौट आया। उसी वर्ष मेरी शादी तय हुई और तुरंत बाद ओटीसी वर्ग में मुझे अतिथि विभाग में कार्य करने का अवसर मिला। 1963 में जब गुरुजी उसी वर्ग में आए, तो उन्होंने मुझे तुरंत पहचान लिया। भाऊराव जी ने बताया कि मैं प्रचारक बन चुका हूँ और गोरखपुर नियुक्ति के लिए तैयार हूँ। गुरुजी ने पीठ थपथपाई और कहा, बहुत अच्छा, पूरे मन से कार्य करो। आज भी उस क्षण को याद कर रोमांच हो उठता है। गुरुजी का वह आशीर्वाद मेरे जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है।

आपने अभी डॉ. के.एल. शर्मा जी का एक संस्मरण बताया जिसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति उनकी धारणा बदलने में आपकी भूमिका रही। क्या आगे के जीवन में भी ऐसे और प्रसंग आए, जब आपके प्रयासों से लोगों की सोच या दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ?

प्रचारक बनकर जब मैं गोरखपुर पहुंचा, तब वहां की स्थिति कुछ चुनौतीपूर्ण थी। समाज में और विश्वविद्यालय में संघ को लेकर कई तरह की गलतफहमियां थीं। लेकिन मेरे मन में एक ही भावना थी जैसे वाराणसी में देखा था, वैसे ही संघ का कार्यकर्ता निष्कपट, निःस्वार्थ और पवित्र आचरण वाला होता है। उसी भावना से मैंने काम शुरू किया। मैंने तय किया कि गोरखपुर विश्वविद्यालय का कोई भी प्रोफेसर या छात्र ऐसा न हो जिससे मेरा व्यक्तिगत परिचय न बने। धीरे-धीरे संवाद शुरू किया, कई प्रोफेसर जो पहले संघ के प्रति आलोचनात्मक थे जैसे डॉ. रामचल सिंह और डॉ. गोरखनाथ त्रिपाठी बाद में स्वयं संघ से जुड़े और नेतृत्व करने लगे। फिर मैंने रेलवे अधिकारियों और उनके परिवारों से संबंध बनाना शुरू किया। एक बार एक कम्युनिस्ट विचारधारा से प्रभावित अधिकारी से मिलने गया खुलकर चर्चा हुई, विचारों का आदान-प्रदान हुआ और अंततः वही व्यक्ति संघ के प्रति सकारात्मक हो गए। मैंने गोरखपुर में हर सप्ताह 'हरि कीर्तन' जैसे कार्यक्रम शुरू किए, जिनमें सरकारी अधिकारी और उनके परिवार शामिल होने लगे। धीरे-धीरे पूरा वातावरण बदल गया। जो पहले दूरी रखते थे, वही संघ की विचारधारा से प्रेरित होकर जुड़े। यह मेरे प्रचारक जीवन के सबसे संतोषजनक अनुभवों में से एक रहा।

बचपन में जब भी शाखा लगती, मैं भी पहुँच जाता। 'आओ हम सब मिलकर गाएँ, जग जननी के गान...' जैसे गीतों और संघ की प्रार्थना ने मन पर अमिट छाप छोड़ी। तभी 'भारत माता हमारी माता है' का भाव भीतर गहराई से बस गया। आजादी के बाद जब 1948 में संघ पर प्रतिबंध लगा, तब हमारे घर में कई दिनों तक दो वरिष्ठ प्रचारक माननीय भेड़ी जी और उनके सहयोगी रहे। वह हमारे परिवार के लिए गौरव का समय था और तभी मेरे मन ने संघ के प्रति सम्मान और बढ़ गया।

आपने द्वितीय सरसंघचालक गुरुजी के साथ अपने अनुभव साझा किए। तृतीय सरसंघचालक बालासाहेब देवरस जी और बाद में रज्जू भैया जी, दोनों से भी आपका निकट संबंध रहा। इन दोनों महान व्यक्तित्वों से जुड़े कुछ प्रेरक संस्मरण आप साझा करेंगे?

पूजनीय बालासाहेब देवरस जी मुझे वैसा ही स्नेह देते थे जैसा गुरुजी देते थे। उनमें अद्भुत ह्यूमर था और कार्यकर्ताओं के व्यवहारिक जीवन को लेकर बहुत सजग रहते थे। किसे कहां लगाना है, कैसे मार्गदर्शन देना है, ये वे भली-भांति जानते थे। 1978 में जब मैं राज्यसभा में था, उन्होंने मुझे नॉर्थ ईस्ट, विशेषकर मणिपुर की जिम्मेदारी दी और कहा 'घबराना मत, काम करोगे तो सफलता मिलेगी।' उनके मार्गदर्शन में मैंने वहां काम किया। बालासाहेब जी हमेशा अस्पृश्यता के विरुद्ध खुलकर बोलते थे... कहते थे, 'छुआछूत यदि पाप नहीं तो फिर दुनिया में कोई पाप नहीं।' उनके समय में संघ के अनेक अनुसांगिक संगठनों का तेजी से विस्तार हुआ। रज्जू भैया जी से मेरा जुड़ाव विद्यार्थी जीवन से रहा। प्रयाग विश्वविद्यालय में वे प्रोफेसर थे और प्रत्येक स्वयंसेवक की व्यक्तिगत चिंता करते थे। उनके व्यवहार, सादगी और सहजता ने मेरे जीवन को गढ़ा। उनका जीवन स्वयं एक आदर्श था... जैसे जीते थे, वैसा ही संघ के संस्कारों का उदाहरण प्रस्तुत करते थे। तीनों सरसंघचालकों गुरुजी, बालासाहेब देवरस जी और रज्जू भैया जी का स्नेह, मार्गदर्शन और व्यक्तित्व मेरे जीवन की दिशा तय करने वाले रहे।

संघ के प्रचारक के रूप में आपका

जीवन तो अत्यंत सक्रिय और संतोषप्रद रहा। फिर आपने राजनीति में कदम कैसे रखा? वह यात्रा कैसे प्रारंभ हुई?

देखिए, राजनीतिक मानसिकता मेरी कभी नहीं रही। सन् 1966 में कानपुर में ओटीसी का संबोधन देने गया था, तभी पूज्य रज्जू भैया ने मुझे बुलाया और कहा कि जनसंघ में लोगों की आवश्यकता है। मैंने साफ कहा, 'भैया, मैं नहीं जाऊंगा, राजनीति हमारी मानसिकता नहीं है।' रज्जू भैया मुस्कराए और कहा विचार करो। वरिष्ठ प्रचारकों से सलाह लेने के बाद, भाऊराव जी ने बताया कि मेरी योजना जनसंघ में बन गई है। मैंने कहा, 'योजना बन गई तो जाना ही होगा।' इस तरह बेमन से सही, मेरी पहली नियुक्ति आजमगढ़ में हुई वह क्षेत्र कम्युनिस्टों और समाजवादियों का गढ़ था। जनसंघ कार्यालय की छोटी कोठरी में ठहरकर मैंने गांव-गांव जाकर सदस्यता अभियान चलाया। प्रारंभ में कठिनाई थी, पर धीरे-धीरे लोग जुड़ने लगे। नगर पालिका के चुनाव में जब जनसंघ ने जोरदार जीत हासिल की, तो लोगों का आत्मविश्वास भी बढ़ा। मैंने यह प्रयास किया कि समाज के हर वर्ग से नेतृत्व उभरे दलित, पिछड़े, किसान, व्यापारी और संघ की सामाजिक समरसता का भाव राजनीति में भी साकार हो। इसी अभियान में कई कार्यकर्ता सामने आए, जैसे राजनाथ सिंह जी, महेंद्रनाथ पांडे जी, मनोज सिन्हा जी, जिन्होंने जनसंघ से भाजपा तक संगठन को मजबूत किया। मेरी कोशिश हमेशा यही रही कि हर वर्ग की बराबर भागीदारी सुनिश्चित हो और संघ का समरसता का डीएनए राजनीति में भी कायम रहे।

आप भले ही अनमने मन से जनसंघ में गए हों, लेकिन वहां जो कीर्तिमान आपने स्थापित किए, वह अद्भुत हैं। उत्तर प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष के रूप में, केंद्रीय मंत्री के रूप में हर भूमिका में आपका कार्य उल्लेखनीय रहा। इस पूरे राजनीतिक जीवन में, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से मिले अनुभवों, अनुशासन और कार्यपद्धति का आप पर कितना प्रभाव रहा?

मैं तो हमेशा कहता हूं कि मेरे जीवन में जो भी कुछ हुआ, उसकी जड़ संघ में ही है। जब मैं जनसंघ का संगठन मंत्री था, तब पूर्वी उत्तर प्रदेश की जिम्मेदारी मेरे पास थी- गोरखपुर, वाराणसी, आजमगढ़, सब जगह लगातार प्रवास करके काम किया। फिर जब जयप्रकाश नारायण जी का संपूर्ण क्रांति आंदोलन शुरू हुआ, तो संघ और नानाजी देशमुख जी के मार्गदर्शन में मुझे पूर्वी उत्तर प्रदेश का संयोजक बनाया गया। मैंने कई माह तक गुजरात के मेहसाणा में शंकर सिंह वाघेला के साथ काम किया। उसी दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी से भी पहली बार वहीं मुलाकात हुई थी... वो अक्सर कहते हैं कि कलराज जी ने मुझसे पर्चे बंटवाए थे! लेकिन असली परीक्षा तो आपातकाल में आई। इंदिरा जी ने लोकतंत्र पर जो प्रहार किया, उसके खिलाफ हम सब भूमिगत होकर काम करने लगे। अलग-अलग भेष बदलकर गोरखपुर, देवरिया, वाराणसी में संगठन को जीवित रखा। एक बार देवरिया में एक कार्यकर्ता के परिवार पर अत्याचार हुआ, मैं रात को पैदल गांव पहुंचा, कार्यकर्ताओं से बैठक की लेकिन किसी ने खबर दे दी और मैं पकड़ा गया। उस समय मेरे ऊपर ₹10,000 का इनाम घोषित था। मैं 19 महीने जेल में रहा। लेकिन सच कहूँ तो उन 19 महीनों ने मेरे भीतर संघ का संस्कार और दृढ़ता और गहरी कर दी। आपातकाल के बाद जब जनता पार्टी बनी, तो संघ ने ही तय किया कि लोकतंत्र को पुनर्जीवित करने के लिए हमें राजनीति में उतरना है। हम लोगों ने वही किया। राजनीति में कभी निजी स्वार्थ नहीं था यह राष्ट्र सेवा का विस्तार मात्र था। आज मैं कह सकता हूँ मेरा तन, मन, चिंतन सब संघ से निर्मित है। संघ ने मुझे राष्ट्रवाद दिया, अनुशासन दिया और यह विश्वास दिया कि व्यक्ति नहीं, विचार ही सर्वोपरि है।

1925 से 2025 तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सौ वर्षीय यात्रा संघर्ष, समर्पण और विस्तार की गाथा रही है। आपने संघ के प्रारंभिक कठिन दौर से लेकर आज की प्रतिष्ठित स्थिति तक सब कुछ निकट से देखा है। आप इस शताब्दी यात्रा को किस रूप में देखते हैं और किन कारणों से आज संघ इतनी व्यापक स्वीकृति और प्रभाव प्राप्त कर सका है?

संघ का चिंतन अत्यंत व्यापक है... वह सबको साथ लेकर चलने की प्रेरणा देता है। भारतीयता को जीवन का आधार मानते हुए, हमने जन-जन तक यही संदेश पहुंचाने का प्रयास किया कि कौन किस दल का है, यह नहीं, बल्कि सबका उद्देश्य राष्ट्र हो। मेरे राजनीतिक जीवन में विभिन्न विचारधाराओं के नेताओं से आत्मीय संबंध रहे चाहे इंदिरा गांधी हों, चंद्रशेखर जी, सुरेंद्र मोहन जी या भूपेश गुप्ता जैसे नेता। मतभेद हो सकते हैं, पर मनभेद नहीं होने चाहिए यह संघ के संस्कारों की ही देन है। संघ के संस्थापक डॉक्टर हेडगेवार जी ने प्रारंभ से ही स्पष्ट किया था हिंदुत्व ही राष्ट्रीयत्व है। अर्थात् भारतीय जीवन पद्धति को आत्मसात कर ही सच्चे अर्थों में राष्ट्र निर्माण संभव है। संघ ने शाखाओं, गीतों, खेलों और संस्कारों के माध्यम से यही भावना समाज में जगाई 'नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे' जैसे शब्द केवल प्रार्थना नहीं, बल्कि जीवन दृष्टि हैं। आज संघ ने सौ वर्षों की यात्रा पूरी की है। प्रारंभिक संघर्षों से आगे बढ़कर वह अब विश्व स्तर पर भारतीयता का प्रतिनिधि बन चुका है। विश्व आज भारत की ओर उम्मीद से देख रहा है, क्योंकि यहां का नेतृत्व संघ के संस्कारों से पोषित है जैसा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के जीवन में हम देखते हैं। उन्होंने संसद को 'लोकतंत्र का मंदिर' मानकर उसे प्रणाम किया, संविधान को अपने सिर पर रखकर सम्मान दिया यही संघ की शिक्षाओं का मूर्त रूप है। संघ ने प्रचार से अधिक संस्कार पर ध्यान दिया और आज वही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। इन सौ वर्षों में संघ ने यह सिद्ध किया है कि भारतीयता ही वह पथ है जो विश्व को दिशा दे सकता है। आने वाले समय में भारत अपने वैदिक, पुराण और आधुनिक मूल्यों का समन्वय कर विश्व का मार्गदर्शन करेगा यही मेरा दृढ़ विश्वास है। ■

विशेष अवसरों पर स्वयंसेवकों द्वारा किए गए कार्य

अमित शर्मा
अस्सिटेंट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज, दिल्ली

हाल ही में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष मनाया। संघ आज न केवल भारत में बल्कि विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठनों में गिना जाता है। संघ ने हमेशा राष्ट्र निर्माण, सामाजिक एकता और सेवा कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसका उद्देश्य समाज से बुराइयों को दूर कर लोगों को जोड़ना और राष्ट्रप्रेम की भावना फैलाना है। संघ का मानना है कि किसी राष्ट्र की शक्ति उसके संगठित समाज में निहित होती है। यही कारण है कि संघ व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ने और समाज को सशक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहा है।

संघ की असली ताकत उसके स्वयंसेवक हैं, जो बिना किसी स्वार्थ या मान्यता की अपेक्षा के समाजसेवा में लगे रहते हैं। ये स्वयंसेवक गांव-गांव और बस्ती-बस्ती में शाखाओं के माध्यम से संगठन, अनुशासन और सेवा की भावना का प्रसार करते हैं। आज संघ के करोड़ों स्वयंसेवक भारत ही नहीं, विदेशों में भी समाजकार्य में सक्रिय हैं। संघ की परंपरा रही है कि विपत्ति और विशेष अवसरों में यह देशवासियों के लिए संबल बनकर खड़ा रहता है। स्वयंसेवक हर कठिन समय में अग्रणी भूमिका निभाते आए हैं।

विशेष अवसरों पर संघ स्वयंसेवकों का योगदान-

1) त्यौहारों और मेलों की सुव्यवस्था : 1925 में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी ने नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। अगले वर्ष 1926 में उन्होंने स्वयंसेवकों को रामनवमी यात्रा के अवसर पर रामटेक भेजा। वहां देवदर्शन के लिए जुटी भारी भीड़ को स्वयंसेवकों ने व्यवस्थित किया, जिससे दर्शन सभी के लिए सुगम और व्यवस्थित हो गया। इस प्रकार संघ में तीर्थ स्थानों, मेलों और पर्वों में सुव्यवस्था बनाए रखने की परंपरा स्थापित हुई, जो आज भी जारी है।

2) भय-निवारण का कार्य : 1927 में नागपुर में उपद्रव की एक बड़ी योजना सामने आई। संघ के स्वयंसेवकों ने दृढ़ प्रतिरोध दिखाया और उपद्रव को रोका। इससे समाज में भय समाप्त हुआ और लोगों में आत्मविश्वास लौट आया। इससे पहले केरल में मोपला दंगे और अन्य स्थानों पर हुए सांप्रदायिक दंगे समाज में भय और असुरक्षा का वातावरण पैदा कर चुके थे।

3) विभाजन पीड़ितों की रक्षा और सहायता : स्वतंत्रता प्राप्ति के समय हुए विभाजन ने देश को दंगों की आग में झोंक दिया। ऐसे समय में स्वयंसेवकों ने दंगा-पीड़ितों की सुरक्षा और सहायता में अहम भूमिका निभाई। पाकिस्तान के पंजाब, सिंध और अन्य प्रभावित क्षेत्रों में संघ का प्रभाव था। वहां स्वयंसेवकों ने अपने प्राणों की आहुति देकर लोगों को सुरक्षित भारत लाया। भारत में लगभग 3000 राहत शिविर बनाए गए, जहां शरणार्थियों को भोजन, वस्त्र और सुरक्षा प्रदान की गई। स्वयंसेवकों की यह सेवा पूरी निष्ठा और मनोयोग से की गई।

4) कश्मीर सीमा की निगरानी : अक्टूबर 1947 से स्वयंसेवकों ने कश्मीर सीमा पर पाकिस्तानी सेना की गतिविधियों पर लगातार नजर रखी। कई स्वयंसेवकों ने मातृभूमि की रक्षा करते हुए लड़ाई में प्राण भी दिये। इस समय सरसंघचालक माधवराम गोलवलकर जी श्रीनगर पहुंचे और महाराजा हरिसिंह से मुलाकात की। इसी मुलाकात के बाद महाराजा ने कश्मीर के भारत में विलय की सहमति दी।

5) राज्यों के मुक्ति संग्राम में योगदान : आरएसएस स्वयंसेवक दादरा, नगर हवेली और गोवा मुक्तिकरण आंदोलन (1954-1961) में निर्णायक भूमिका में रहे। दादरा नगर हवेली के पुर्तगाली शासन से मुक्त होने पर स्वयंसेवकों ने 2 अगस्त 1954 को तिरंगा फहराया और प्रशासन भारत सरकार को सौंपा। गोवा मुक्ति संग्राम

में जगन्नाथ राव जोशी और उनके साथियों ने गिरफ्तारी देकर देशभक्ति का उदाहरण पेश किया, जिसके परिणामस्वरूप भारत ने अंततः दिसंबर 1961 में सैन्य हस्तक्षेप कर गोवा को स्वतंत्र किया ।

6) युद्धकालीन योगदान : सन् 1962 में चीन के साथ और फिर सन् 1965 में पाकिस्तान के साथ देश को युद्ध का सामना करना पड़ा। 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान स्वयंसेवकों ने सीमा क्षेत्रों में सेना की सहायता की, रसद व्यवस्था और शहीदों के परिवारों की सेवा का भार संभाला। युद्ध में स्वयंसेवकों के योगदान को देखते हुए नेहरू सरकार को भी 1963 के गणतंत्र दिवस परेड में आरएसएस को औपचारिक रूप से आमंत्रित करना पड़ा था। मात्र दो दिन पहले मिले निमंत्रण पर 3500 स्वयंसेवक गणवेश में उपस्थित हो गए। पाकिस्तान से युद्ध के समय तत्कालीन प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने भी संघ से सहायता ली थी। शास्त्री जी ने कानून-व्यवस्था की स्थिति संभालने में मदद देने और दिल्ली का यातायात नियंत्रण अपने हाथ में लेने का आग्रह किया, ताकि इन कार्यों से मुक्त किए गए पुलिसकर्मियों को सेना की मदद में लगाया जा सके। घायल जवानों के लिए सबसे पहले रक्तदान करने वाले भी संघ के स्वयंसेवक थे। युद्ध के दौरान कश्मीर की हवाईपट्टियों से बर्फ हटाने का भी काम संघ के स्वयंसेवकों ने किया था।

7) आपातकाल में लोकतंत्र की रक्षा में योगदान : भारत में आपातकाल 25 जून 1975 को लगाया गया था जो 21 मार्च 1977 तक चला। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की सलाह पर राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने देश में 'आंतरिक अशांति' के कारण राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा की थी। आपातकाल में नागरिक स्वतंत्रताएं निलंबित कर दी गई थीं और चुनावों को रद्द कर दिया गया था। इसे भारतीय लोकतंत्र का काला अध्याय माना जाता है। आपातकाल के दौर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, किंतु इसके स्वयंसेवक भूमिगत होकर लोकतंत्र की रक्षा के लिए सक्रिय रहे। तत्कालीन सरसंघचालक बालासाहब देवरस जी को गिरफ्तार किया गया, पर अनेक स्वयंसेवक गिरफ्तारी से बचते हुए 'लोक संघर्ष समिति' से जुड़कर गुप्त प्रचार, साहित्य वितरण और संगठन संचालन का कार्य करते रहे। आरएसएस से जुड़े हजारों स्वयंसेवकों को जेल में रखा गया जबकि शेष भूमिगत रहकर समाचार पत्र, पर्चे और संदेशों के माध्यम से जनता को जागरूक करते रहे । प्रत्येक प्रांत में संघ ने संपर्क केंद्र बनाए, और जनसंघ, समाजवादी दल तथा जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व वाले आंदोलनों को सूचनात्मक व जनसमर्थन प्रदान किया अंततः जब 1977 में आपातकाल समाप्त हुआ और चुनाव हुए, तो संघ की यह भूमिगत भूमिका लोकतंत्र की पुनर्स्थापना में निर्णायक सिद्ध हुई ।

8) 1984 के दंगों में लोगों की सहायता : 1984 के सिख विरोधी दंगों के समय बड़ी संख्या में सिख परिवारों को संघ के स्वयंसेवकों ने अपने घरों में शरण दी। दंगों के दौरान सिख परिवारों को आश्रय और सुरक्षा प्रदान की गई।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक प्रत्येक विशेष अवसर पर राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हैं। वे त्यौहारों में सुव्यवस्था, विभाजन पीड़ितों की सहायता, कश्मीर सीमा की निगरानी, युद्ध और आपातकाल में समर्थन, प्राकृतिक आपदाओं और महामारी में राहत कार्यों में सक्रिय रहते हैं। उनकी नि:स्वार्थ सेवा, अनुशासन और संगठन भावना संघ की शताब्दी परंपरा का प्रतीक है।

9) प्राकृतिक आपदाओं में राहत कार्यों में योगदान : 1971 और 1977 के चक्रवातों के समय सेवा भारती और संघ के स्वयंसेवकों ने राहत व पुनर्वास कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाई। 1971 में ओडिशा में आए चक्रवात और 1977 में आंध्र प्रदेश में आया तूफान बड़ी प्राकृतिक आपदा साबित हुए थे। उस वक्त स्वयंसेवक घर-घर जाकर भोजन व दवाइयां पहुंचाने में जुटे रहे। 2001 के गुजरात भूकंप के बाद संघ कार्यकर्ताओं ने मलबे से लोगों को बचाया, शवों का अंतिम संस्कार किया और पुनर्वास शिविर चलाए। 2013 में भी उत्तराखंड बाढ़ आपदा में सेवा भारती के 5,000 स्वयंसेवकों ने भारतीय सशस्त्र बलों के साथ मिलकर राहत कार्य किए। साथ ही लगभग एक लाख से अधिक तीर्थयात्रियों को सुरक्षित निकाला। इसी तरह केरल और असम में 2018-2020 की बाढ़ के समय भी स्वयंसेवक राहत शिविरों, दवा वितरण और पुनर्वास योजनाओं में सक्रिय रहे।

10) महामारी/स्वास्थ्य विपत्तियों के समय स्वयंसेवकों का योगदान : सन् 2020-2021 में कोविड-19 महामारी के दौरान स्वयंसेवकों ने देशभर में ऑक्सीजन, भोजन और स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराईं। कई स्थानों पर निरंतर कार्य करने वाले सहायता केंद्र स्थापित किए गए। महामारी में भी स्वयंसेवकों ने देशभर में भोजन वितरण, रक्तदान, और स्वास्थ्य सहायता जैसी सेवाएं प्रदान की, जिससे संघ का सेवा स्वरूप और प्रबल हुआ।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने प्रत्येक विशेष अवसर चाहे वह स्वतंत्रता संग्राम का अध्याय हो, युद्धकाल हो या प्राकृतिक आपदा में राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखा है। उनकी सेवा का स्वरूप निःस्वार्थ, अनुशासित और संगठित रहा है। यह परंपरा आज भी आरएसएस के शताब्दी वर्ष (2025) में उसी जीवंत भावना के साथ जारी है, जो भारत को आत्मनिर्भर और एकजुट बनाने की दिशा में कार्यरत है । ■

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और नारी उत्थान
शताब्दी की प्रेरक यात्रा

मोनिका चौहान
शिक्षिका

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आज अपनी शताब्दी यात्रा पर है। एक सदी की यह यात्रा केवल संगठन की विस्तार गाथा नहीं, बल्कि समाज-जीवन में परिवर्तन और राष्ट्र चेतना के पुनर्जागरण की कथा है। इस सौ वर्ष के कालखण्ड में संघ ने जहां राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक एकता का भाव जगाया, वहीं महिलाओं के जीवन, उनकी भूमिका और सम्मान को भी नई ऊंचाई दी। संघ के कार्य और विचार ने भारतीय नारी को केवल परिवार की धुरी भर नहीं माना, बल्कि समाज की दिशा देने वाली शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण सदैव स्पष्ट रहा है - नारी समाज की अर्धांगिनी नहीं, बल्कि उसकी जीवनशक्ति है। वह केवल घर की मर्यादा नहीं, बल्कि राष्ट्र की मर्यादा की रक्षक भी है। संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार ने प्रारंभ से ही माना कि यदि भारत को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाना है, तो नारी को उसके वास्तविक सामर्थ्य के साथ खड़ा करना आवश्यक है।

इस सोच का ही परिणाम था कि संघ के प्रारंभिक वर्षों में ही महिलाओं के लिए अलग संगठन की आवश्यकता महसूस की गई, जिससे वे भी संगठन, अनुशासन और राष्ट्रभावना के साथ जुड़ सकें।

सन् 1936 में लक्ष्मीबाई केलकर, जिन्हें स्नेहपूर्वक मौसीजी कहा जाता है, ने इस विचार को साकार रूप दिया। उन्होंने "राष्ट्र सेविका समिति" की स्थापना की - जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से विकसित महिलाओं का स्वतंत्र संगठन बना। उस समय समाज में महिलाओं की भूमिका सीमित मानी जाती थी; ऐसे युग में समिति ने भारतीय नारी के भीतर छिपे नेतृत्व, अनुशासन और आत्मबल को जागृत किया। मौसीजी कहा करती थीं - "हम नारी हैं, पर निर्बल नहीं; हम घर संभालते हैं, तो राष्ट्र भी संभाल सकते हैं।" यही विचार महिलाओं के लिए नये क्षितिज खोलता गया।

राष्ट्र सेविका समिति ने घर-घर तक संगठन की भावना पहुंचाई। शाखाएं खुलीं, प्रशिक्षण वर्ग बने, और महिलाओं में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ। बालिकाओं के संस्कार वर्ग, परिवार शिक्षण कार्यक्रम, सेवा परियोजनाएं और ग्रामोदय कार्यों के माध्यम से महिलाओं ने समाज में ठोस योगदान दिया। आज समिति के हजारों केंद्र देशभर में सक्रिय हैं - जहां महिलाएं शिक्षा, स्वास्थ्य, आत्मरक्षा, स्वावलंबन और समाजसेवा के क्षेत्र में कार्य

कर रही हैं। यह संगठन न केवल महिलाओं को सशक्त बना रहा है, बल्कि उन्हें समाज के नेतृत्व में लाने का कार्य भी कर रहा है।

संघ और उससे प्रेरित संस्थाओं में अनेक महिलाएं ऐसी हैं जिन्होंने अपने कार्य से समाज में उदाहरण प्रस्तुत किया। लक्ष्मीबाई केलकर का नाम तो इतिहास में दर्ज है ही, परंतु उनके बाद आई प्रभा देशमुख ने महिला शिक्षा और संस्कार केंद्रों की स्थापना में अग्रणी भूमिका निभाई।

सुभद्रा भट्टी ने ग्रामीण स्वास्थ्य, आदिवासी बालिकाओं के छात्रावास और महिला स्वावलंबन के कार्यों से सेवा का नया अध्याय लिखा। चंद्रकांता जोशी जैसी सेविकाओं ने शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करते हुए विद्या भारती के अंतर्गत बालिकाओं के लिए वैचारिक शिक्षा की नई दिशा दी।

इन महिलाओं ने यह प्रमाणित किया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्कारों से प्रेरित नारी केवल परिवार की नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की निर्माता भी है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा से प्रेरित अनेक संस्थाएं आज महिलाओं के जीवन में परिवर्तन ला रही हैं। विद्या भारती के विद्यालयों में लाखों महिला शिक्षक नई पीढ़ी को केवल पढ़ा नहीं रहीं, बल्कि उन्हें संस्कारित कर समाज के प्रति उत्तरदायी नागरिक बना रही हैं।

वनवासी कल्याण आश्रम के छात्रावासों में सेविकाएं आदिवासी बालिकाओं के जीवन को शिक्षा और आत्मसम्मान से आलोकित कर रही हैं। सेवा भारती और महिला मंडल न्यास जैसे संगठनों ने महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता प्रशिक्षण, हस्तकला, स्वदेशी उत्पाद निर्माण और स्वास्थ्य सेवाओं की योजनाएं चलाकर सामाजिक सशक्तिकरण की ठोस मिसाल पेश की है।

संघ की दृष्टि में नारी सशक्तिकरण का अर्थ केवल अधिकार प्राप्ति नहीं, बल्कि कर्तव्य चेतना है। संघ मानता है कि पुरुष और महिला प्रतिस्पर्धी नहीं, पूरक हैं। भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति कहा गया है – जो सृजन, पोषण और प्रेरणा की स्रोत है। इसलिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का नारी दृष्टिकोण पश्चिमी नारीवाद से भिन्न है। वह नारी को "स्वतंत्र व्यक्तित्व" तो मानता है, पर साथ ही "सामाजिक उत्तरदायित्व" की वाहक भी समझता है। यही कारण है कि संघ के प्रशिक्षण में "शक्ति" और "संस्कार" दोनों समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं।

संघ की शाखाओं और सेविका समिति के शिविरों में जो अनुशासन, संगठन और आत्मबल सिखाया जाता है, वही आगे जाकर समाज में बदलाव का कारण बनता है। कई महिलाएं जो पहले झिझक और सीमाओं में बंधी थीं, आज समाजसेवी, शिक्षक, डॉक्टर, अधिकारी और प्रशासक बनकर राष्ट्र की सेवा कर रही हैं। उनके भीतर जो आत्मविश्वास जगा, वह इस बात का प्रमाण है कि संघ के संस्कार किसी को पीछे नहीं, बल्कि आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

सन् 1936 में लक्ष्मीबाई केलकर, जिन्हें स्नेहपूर्वक मौसीजी कहा जाता है, ने इस विचार को साकार रूप दिया। उन्होंने 'राष्ट्र सेविका समिति' की स्थापना की - जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से विकसित महिलाओं का स्वतंत्र संगठन बना। उस समय समाज में महिलाओं की भूमिका सीमित मानी जाती थी; ऐसे युग में समिति ने भारतीय नारी के भीतर छिपे नेतृत्व, अनुशासन और आत्मबल को जागृत किया। मौसीजी कहा करती थीं - ''हम नारी हैं, पर निर्बल नहीं; हम घर संभालते हैं, तो राष्ट्र भी संभाल सकते हैं।'' यही विचार महिलाओं के लिए नये क्षितिज खोलता गया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की यह शताब्दी यात्रा केवल अतीत का उत्सव नहीं, बल्कि भविष्य का संकल्प भी है। आज जब समाज परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, तब महिलाओं की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। संघ ने इस भूमिका को समय से पहले पहचाना और उसे दिशा दी।

अब आवश्यक है कि इस परंपरा को और व्यापक बनाया जाए – ताकि हर महिला अपने भीतर की शक्ति को पहचान सके और समाज को नई दिशा दे सके।

नारी के उत्थान से ही राष्ट्र का उत्थान : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सौ वर्षों का इतिहास यह प्रमाण है कि संगठन का उद्देश्य केवल राजनीतिक या सामाजिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण का है। इस पुनर्जागरण का सबसे सशक्त आधार "नारी उत्थान" ही है। आज जब राष्ट्र सेविका समिति की शाखाओं में हजारों महिलाएं एक साथ प्रार्थना करती हैं –"नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः" – तब यह केवल एक उद्घोष नहीं, बल्कि भारतीय नारी की आत्मशक्ति का उद्घाटन है।

संघ की यह यात्रा बताती है कि जब नारी संगठित होती है, तो समाज सशक्त होता है; जब नारी शिक्षित और आत्मविश्वासी होती है, तो राष्ट्र समृद्ध होता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने बीते सौ वर्षों में यही किया – नारी को जगाया, जोड़ा और उठाया। और यही नारी अब इस राष्ट्र की नई दिशा लिखने के लिए तैयार है।

■

स्वदेशी : भारत की अर्थनीति और संस्कृति का जीवंत प्रतीक

डॉ. अश्विनी महाजन
राष्ट्रीय सह-संयोजक, स्वदेशी जागरण मंच

पिछले सौ वर्षों में दुनिया ने प्रौद्योगिकी, भौतिक वस्तुओं के उत्पादन और आर्थिक सेवाओं के विस्तार के मामले में अभूतपूर्व भौतिक प्रगति की है। अगर हम इस प्रगति को सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के संदर्भ में मापें, तो हम पाते हैं कि पिछले सौ वर्षों में दुनिया की जीडीपी कई गुना बढ़ गई है। विभिन्न चरणों में हुई औद्योगिक क्रांतियों ने इस भौतिक विकास में योगदान दिया है। आम तौर पर लोग अधिक और बेहतर गुणवत्ता वाली वस्तुओं का उपभोग कर रहे हैं। बुनियादी ढाँचे, ऑटोमोबाइल, विमानन, अंतरिक्ष, संचार आदि के क्षेत्र में प्रगति सबसे उल्लेखनीय रही है। लेकिन साथ ही, पर्यावरण क्षरण, आर्थिक असमानताओं और सामाजिक विघटन के कारण मानवता ने अपने अस्तित्व के मूल आधार को ही संकट में डाल दिया है। हमारा समाज और अर्थव्यवस्था उस स्तर पर पहुँच गए हैं जहाँ हम देखते हैं कि अगर इन बुराइयों को दूर करने के लिए कुछ नहीं किया गया तो मानव सभ्यता ही नहीं सृष्टि से जीवन ही विलुप्त हो सकता है।

वर्तमान बुराइयों का मूल कारण यह है कि हमने यह मान लिया है कि यदि अधिक वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन बढ़ता है, यदि अधिक उपभोग होता है, ऊर्जा की खपत बढ़ती है और जीडीपी बढ़ती है, तो इसका मतलब है कि विकास हो रहा है। यह मान लिया गया था कि इस भौतिक प्रगति से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का स्वतः ही समाधान हो जाएगा, क्योंकि इस बढ़े हुए उत्पादन का लाभ स्वतः ही आम जनता तक पहुंचेगा और उनका जीवन बेहतर होगा। लेकिन हम जमीनी स्तर पर जो देखते हैं, कि असमानताएं तेजी से बढ़ रही हैं, जहां कुछ लोग विलासिता का आनंद ले रहे हैं और आम जनता गरीबी की चपेट में है। शायद, पर्यावरण के बिगड़ते हालात के बारे में कोई

विचार नहीं किया गया। बाद में, जब यह महसूस किया गया कि पर्यावरण के लिए वास्तविक खतरा है, तो सुधार करने के बजाय, समाधान सुझाए जाने लगे, कार्बन क्रेडिट और कार्बन ट्रेडिंग के रूप में पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए बाज़ार समाधान ढूँढ़े जाने लगे, जहाँ प्रदूषक उन लोगों को भुगतान करेंगे जो कम प्रदूषण फैलाकर या वृक्षारोपण में योगदान देकर ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करते हैं, और इस तरह ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में संतुलन बनाए रखते हैं। लेकिन इन समाधानों से शायद ही कोई बदलाव आया; और हम जो देख रहे हैं वह यह है कि दशकों से ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में निरंतर वृद्धि हो रही है, वैश्विक तापमान अभूतपूर्व रूप से बढ़ रहा है, और लगभग 2°C की वृद्धि हुई है, जिससे ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का स्तर बढ़ रहा है, जिससे समुद्र के आसपास की बस्तियाँ खतरे में पड़ रही हैं, वायु की गुणवत्ता बदतर हो रही है जिससे साँस लेना भी मुश्किल हो रहा है, पानी और मिट्टी अभूतपूर्व रूप से प्रदूषित हो रहे हैं और इस प्रकार पृथ्वी रहने योग्य नहीं रह रही है। भौतिक प्रगति के साथ, मानवता को भौतिक प्रगति प्राप्त करने की लालसा और लालच के रूप में एक और झटका लगा, जिससे सामाजिक और पारिवारिक विघटन हुआ। मूल्यों में यह गिरावट व्यक्तिवाद के उदय के साथ और भी बढ़ गई।

वर्तमान व्यवस्था में, हमें इन समस्याओं का कोई समाधान नजर नहीं आता, और वर्तमान उत्पादन व्यवस्था के कारण मानवता विलुप्त होने, बढ़ती असमानताओं और अभावों के वास्तविक खतरे का सामना कर रही है। वर्तमान व्यवस्था एकाधिकार को जन्म दे रही है, जिससे समाजों में शोषण और गहरी अशांति फैल रही है। वैश्विक शक्तियों द्वारा प्रभुत्व की लालसा और डीप स्टेट द्वारा रची गई अशांति के कारण वैश्विक स्तर पर संघर्षों को मानवता के अस्तित्व के लिए एक बड़ा खतरा माना जा रहा है।

यही नहीं पिछले कुछ समय से दुनिया ने भूमंडलीकरण के जिस रास्ते को अपनाया है, उसके कारण कुछ देश अपने आर्थिक लाभ के लिए, दूसरे देशों को निरंतर अपने ऊपर निर्भर करते हुए, अपने आर्थिक हित साधने की कोशिश कर रहे हैं। इसके चलते इन देशों पर आर्थिक निर्भरता बढ़ने के कारण अन्य देशों को नुकसान हो रहा है। उदाहरण के लिए जहां अतिरिक्त क्षमता के बल पर पर दुनिया के दूसरे देशों में अपना सामान डंप कर रहा है और वैश्विक मूल्य शृंखला में रेयर अर्थ मैटीरियल की आपूर्ति को रोक कर उसे

हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रहा है तो दूसरी ओर अमेरिका विभिन्न देशों पर टैरिफ बढ़ाकर उन्हें नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर रहा है।

स्वदेशी का पुनरुत्थान : इन परिस्थितियों में स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और स्वदेशी विकास का दर्शन, एक बार फिर भारत के राष्ट्रीय विमर्श का केंद्रीय विषय बन गया है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान आर्थिक और राजनीतिक आंदोलन के रूप में शुरू हुआ यह आंदोलन अब सतत, समतामूलक और सांस्कृतिक रूप से निहित विकास के एक व्यापक दृष्टिकोण के रूप में विकसित हो रहा है। आज, भारत एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहां वैश्विक परिवर्तन, तकनीकी आत्मनिर्भरता और घरेलू नीतिगत सुधार स्वदेशी सिद्धांतों के पक्ष में संरेखित हो रहे हैं।

भारत की अर्थव्यवस्था और संस्कृति का सजीव प्रतीक है स्वदेशी : स्वदेशी मात्र एक नारा या आर्थिक नीति नहीं है - यह भारत की सभ्यता के जीवनदर्शन का सजीव अभिव्यक्ति है। संस्कृत में निहित आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान की भावना पर आधारित, स्वदेशी एक समग्र दृष्टि प्रस्तुत करता है, जो अर्थव्यवस्था, संस्कृति और नैतिकता तीनों को एक सूत्र में बांधता है। यह व्यक्ति और समाज दोनों को प्रेरित करता है कि वे विदेशी प्रणालियों की अंधी नकल करने के बजाय अपने देश की उत्पादकता, स्थानीय उद्यमिता और राष्ट्रीय कल्याण को प्राथमिकता दें।

इतिहास में स्वदेशी भारत के स्वतंत्रता संग्राम की आत्मा बन गया। यह न केवल औपनिवेशिक आर्थिक शोषण के विरुद्ध एक आंदोलन था, बल्कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का सकारात्मक कार्यक्रम भी था। चरखा, ग्रामोद्योग और देशी हस्तशिल्प आर्थिक लोकतंत्र और नैतिक पुनर्जागरण के प्रतीक बन गए।

आर्थिक दृष्टि से स्वदेशी का उद्देश्य एक ऐसी आत्मनिर्भर व्यवस्था स्थापित करना है, जिसमें उत्पादन का उद्देश्य केवल लाभ न होकर जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति हो। यह विकेन्द्रीकृत उद्योग, छोटे उद्यम और भारत की परिस्थितियों के अनुरूप तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देता है। सांस्कृतिक दृष्टि से स्वदेशी भारतीय ज्ञान परंपरा, शिल्पकला और जीवनमूल्यों में निहित उस गौरव का प्रतिनिधित्व करता है, जो भौतिक प्रगति के साथ-साथ सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय संतुलन पर भी बल देता है।

इक्कीसवीं सदी में भी स्वदेशी की प्रासंगिकता बनी हुई है। वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं की अस्थिरता और बढ़ते आर्थिक राष्ट्रवाद के युग में भारत का स्वदेशी मार्ग एक टिकाऊ विकल्प प्रस्तुत करता है - ऐसा मॉडल जो केवल मुनाफे पर नहीं, बल्कि श्रम-सम्मान, पर्यावरण-संवेदनशीलता और सामुदायिक कल्याण पर आधारित है। “वोकल फॉर लोकल” और “मेक इन इंडिया” जैसे अभियान इस स्थायी दर्शन की आधुनिक अभिव्यक्तियां हैं। इस प्रकार, स्वदेशी भारत की अर्थव्यवस्था और संस्कृति का एक सजीव प्रतीक है - जो अतीत को भविष्य से, परंपरा को नवाचार से, और व्यक्ति के कल्याण को राष्ट्र की प्रगति से जोड़ता है।

आज स्वदेशी के लिए अनुकूल वातावरण : आत्मनिर्भर भारत पर सरकार का जोर स्वदेशी आदर्शों के प्रति नई प्रतिबद्धता को दर्शाता है। मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया और पीएम गति शक्ति जैसी पहलों का उद्देश्य घरेलू उत्पादन, नवाचार और लॉजिस्टिक्स दक्षता को बढ़ाना और विदेशी वस्तुओं और प्रौद्योगिकी पर निर्भरता कम करना है।

स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और स्वदेशी विकास का दर्शन, एक बार फिर भारत के राष्ट्रीय विमर्श का केंद्रीय विषय बन गया है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान आर्थिक और राजनीतिक आंदोलन के रूप में शुरू हुआ यह आंदोलन अब सतत, समतामूलक और सांस्कृतिक रूप से निहित विकास के एक व्यापक दृष्टिकोण के रूप में विकसित हो रहा है।

बदलती वैश्विक व्यापार गतिशीलता : कोविड-19 महामारी और अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों के दौरान उजागर हुई वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की कमजोरी ने घरेलू लचीलेपन की आवश्यकता को और अधिक मजबूत कर दिया। दुनिया भर के देश आयात पर अत्यधिक निर्भरता पर पुनर्विचार कर रहे हैं, जिससे भारत के लिए स्वदेशी सिद्धांतों पर आधारित अपने स्थानीय विनिर्माण, कृषि और सेवाओं को बढ़ावा देने का अवसर पैदा हो रहा है।

बढ़ती राष्ट्रीय चेतना : भारतीय युवाओं में आर्थिक राष्ट्रवाद की भावना बढ़ रही है। उपभोक्ता न केवल उनके आर्थिक मूल्य के लिए, बल्कि राष्ट्रीय गौरव की अभिव्यक्ति के रूप में भी भारत में निर्मित उत्पादों को तेजी से पसंद कर रहे हैं। यह बदलाव परिधान, प्रौद्योगिकी, हस्तशिल्प और खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में दिखाई दे रहा है।

तकनीकी सशक्तिकरण और डिजिटल पहुंच : भारत में डिजिटल बुनियादी ढांचे का विस्तार स्वदेशी उद्यमियों और छोटे उत्पादकों के लिए नए साधन प्रदान करता है। ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, डिजिटल भुगतान और ओएनडीसी (डिजिटल कॉमर्स के लिए खुला नेटवर्क) जैसी सरकार द्वारा संचालित पहल स्थानीय उत्पादकों को सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचने में सक्षम बनाती हैं- जिससे वैश्विक एकाधिकार का प्रभुत्व कम होता है।

सतत् विकास और पर्यावरण जागरूकता : स्वदेशी दर्शन स्वाभाविक रूप से पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देता है-स्थानीय उत्पादन को प्रोत्साहित करना, परिवहन उत्सर्जन में कमी लाना और समुदाय-आधारित संसाधन प्रबंधन। जैसे-जैसे दुनिया शोषणकारी वैश्वीकरण के स्थायी विकल्पों की तलाश कर रही है, स्वदेशी विकास के एक नैतिक और पारिस्थितिक मॉडल हो प्रादुर्भाव हो रहा है। ■

भारत की बढ़ती वैश्विक भूमिका

21वीं सदी में नई दिल्ली विश्व शांति, स्थिरता और समृद्धि को कैसे आकार दे सकती है

एन. सी. बिपिन्द्र
रक्षा और रणनीतिक मामलों के विश्लेषक

वैश्विक शक्ति संतुलन में ऐतिहासिक परिवर्तन के साथ, भारत एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है, जो तेजी से खंडित होते विश्व में शांति, समृद्धि और स्थिरता के लिए एक निर्णायक शक्ति के रूप में उभरने के लिए तैयार है। संयुक्त राष्ट्र के गलियारों से लेकर हिंद-प्रशांत क्षेत्र तक और जी-20 से लेकर जलवायु कूटनीति तक, भारत की विदेश और सुरक्षा नीतियां क्षेत्रीय जुड़ाव से वैश्विक नेतृत्व की ओर विकसित हो रही हैं। बहुध्रुवीयता, प्रौद्योगिकी प्रतिद्वंद्विता और नई महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा से परिभाषित इस सदी में, भारत का उदय वैश्विक शासन के लिए गहन निहितार्थ रखता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् (विश्व एक परिवार है) के सभ्यतागत लोकाचार में निहित, सिद्धांत और व्यावहारिकता के बीच संतुलन बनाने की इसकी क्षमता, इसे उभरती हुई विश्व व्यवस्था को आकार देने में एक अद्वितीय नैतिक और रणनीतिक लाभ प्रदान करती है। एक बहुध्रुवीय विश्व में भारत की रणनीतिक पहचान भारत का वैश्विक पुनरुत्थान इतिहास की एक दुर्घटना नहीं, बल्कि दशकों के सुविचारित कूटनीतिक प्रयासों का परिणाम है।

जैसे-जैसे दुनिया संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रभुत्व वाली एकध्रुवीय व्यवस्था से हटकर एक जटिल बहुध्रुवीय परिदृश्य की ओर बढ़ रही है, भारत ने खुद को प्रतिस्पर्धी गुटों, विकसित और विकासशील दुनिया, पूर्व और पश्चिम, तथा उत्तर और वैश्विक दक्षिण के बीच एक सेतु के रूप में स्थापित किया है।

दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और 2030 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का अनुमान, दूसरी सबसे बड़ी आबादी और सबसे तेजी से बढ़ते प्रौद्योगिकी और रक्षा क्षेत्रों में से एक के साथ, भारत का प्रभाव इसकी सीमाओं से कहीं आगे तक फैला हुआ है। जी-20, ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ), क्वाड और भारत-ब्राजील- दक्षिण अफ्रीका (आईबीएसए) जैसे समूहों में इसकी सदस्यता, विविध भू-राजनीतिक संरेखणों में एक साथ संलग्न होने की इसकी क्षमता को रेखांकित करती है।

भारत की विदेश नीति आज पांच प्रमुख स्तंभों पर टिकी है-

1. **सामरिक स्वायत्तता** : सभी प्रमुख शक्तियों के साथ बातचीत करते हुए निर्णय लेने में स्वतंत्रता बनाए रखना।

2. **आर्थिक कूटनीति** : रणनीतिक साझेदारी बनाने के लिए व्यापार, निवेश और प्रौद्योगिकी का उपयोग करना।

3. **क्षेत्रीय नेतृत्व** : दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में स्थिरता सुनिश्चित करना।

4. **वैश्विक दक्षिण पक्षधरता** : समतामूलक विकास, जलवायु न्याय और बहुपक्षीय सुधारों को बढ़ावा देना।

5. **रक्षा और सुरक्षा आधुनिकीकरण** : रक्षा निर्माण में प्रतिरोध और आत्मनिर्भरता का निर्माण।

वैश्विक शांति और सुरक्षा के स्तंभ के रूप में भारत : यूक्रेन और गाजा से लेकर दक्षिण चीन सागर तक सशस्त्र संघर्षों से भरे इस युग में, भारत की संतुलित कूटनीति ध्रुवीकरण का एक विकल्प प्रस्तुत करती है। कई शक्तियों के विपरीत जो दबाव या हस्तक्षेप पर निर्भर रहती हैं, भारत का दृष्टिकोण संवाद, संप्रभुता के सम्मान और अंतर्राष्ट्रीय कानून पर जोर देता है। रूस-यूक्रेन संघर्ष के दौरान, नई दिल्ली का सूक्ष्म रुख - पश्चिम या मास्को के साथ आँख मूँदकर जुड़ने से इनकार करना-एक व्यावहारिक शांति सिद्धांत को दर्शाता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह कथन, 'यह युद्ध का युग नहीं है,' विश्व स्तर पर गूंजा और यहां तक कि G-20 की विज्ञप्तियों में भी इसकी प्रतिध्वनि सुनाई दी, जिसने भारत को संयम और बातचीत के लिए एक विश्वसनीय आवाज के रूप में स्थापित किया।

2023 में G-20 के अध्यक्ष के रूप में, भारत ने विभाजनकारी भू-राजनीतिक मुद्दों के माध्यम से मंच का सफलतापूर्वक संचालन किया, वैश्विक आर्थिक सहयोग, विकासशील देशों के लिए ऋण राहत और डिजिटल

समावेशन पर आम सहमति सुनिश्चित की। दिल्ली घोषणापत्र विखंडन के बीच एकता स्थापित करने की भारत की क्षमता का प्रतीक है, जो आज की भू-राजनीति में एक दुर्लभ उपलब्धि है।

समुद्री सुरक्षा पर भारत का जोर, विशेष रूप से महासागर (क्षेत्रों में सुरक्षा और विकास के लिए पारस्परिक और समग्र उन्नति) जैसी पहलों के माध्यम से, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता को मजबूत करता है।

जैसे-जैसे अमेरिका और चीन के बीच रणनीतिक प्रतिस्पर्धा तेज होती जा रही है, हिंद महासागर क्षेत्र में एक व्यापक सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत की भूमिका वैश्विक व्यापार और ऊर्जा प्रवाह के लिए लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है।

आर्थिक नेतृत्व और वैश्विक समृद्धि : भू-राजनीति से परे, भारत का आर्थिक उत्थान वैश्विक समृद्धि की आधारशिला है। 6 प्रतिशत से अधिक की निरंतर वार्षिक जीडीपी वृद्धि, एक फलती-फूलती डिजिटल अर्थव्यवस्था और दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी के साथ, भारत का आर्थिक प्रक्षेपवक्र वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को नया आकार दे रहा है।

दुनिया के अग्रणी लोकतंत्र अब भारत को महत्वपूर्ण क्षेत्रों - सेमीकंडक्टर, हरित ऊर्जा, दुर्लभ मृदा और फार्मास्यूटिकल्स - में लचीले, विविध आपूर्ति नेटवर्क के निर्माण के लिए एक अनिवार्य भागीदार के रूप में देखते हैं, जिससे चीन पर निर्भरता कम हो रही है।

समावेशी विकास और स्थिरता पर भारत का ध्यान वैश्विक विकास लक्ष्यों के अनुरूप भी है। इसकी प्रमुख पहल - मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया - न केवल वैश्विक निवेश आकर्षित करती हैं, बल्कि नवाचार और उद्यमिता के माध्यम से लाखों लोगों को सशक्त भी बनाती हैं।

कूटनीतिक संतुलन : वैश्विक दक्षिण की आवाज : वैश्विक दक्षिण में भारत का नेतृत्व उसकी विदेश नीति की एक निर्णायक विशेषता के रूप में उभरा है। यह स्वीकार करते हुए कि विकासशील देश जलवायु परिवर्तन, ऋण और तकनीकी असमानता का असमान बोझ उठाते हैं, भारत ने वैश्विक शासन प्रणालियों में सुधार करके उन्हें और अधिक प्रतिनिधि बनाने का प्रयास किया है।

2023 की जी-20 बैठकों से पहले 'वैश्विक दक्षिण की आवाज' शिखर सम्मेलन की मेजबानी करते हुए, भारत ने साझा विकास संबंधी चिंताओं को व्यक्त करने के लिए 125 से अधिक देशों को एक साथ बुलाया। इस पहल ने आधुनिक संदर्भ में गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) की भावना को पुनर्जीवित किया, निष्क्रिय तटस्थता के रूप में नहीं, बल्कि सक्रिय बहुपक्षवाद के रूप में जो सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति को बढ़ाता है।

संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन और आईएमएफ जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में भारत लगातार सुधार की वकालत करता रहा है, जिसमें 21वीं सदी की भू-राजनीतिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता भी शामिल है।

इसकी समावेशी कूटनीति अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और दक्षिण-पूर्व एशिया में गूंजती है, दक्षिण-दक्षिण सहयोग को मज़बूत करती है और वैष्विक विभाजन को पाटती है।

प्रौद्योगिकी, नवाचार और मानव विकास : प्रौद्योगिकी और डिजिटल शासन में भारत की बढ़ती भूमिका इसके वैश्विक प्रभाव में एक और आयाम जोड़ती है। आधार, यूपीआई और कोविन सहित डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे में अपने अग्रणी कार्य के साथ, भारत वित्तीय समावेशन और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए मापनीय मॉडल प्रस्तुत करता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह कथन, 'यह युद्ध का युग नहीं है,' विश्व स्तर पर गूंजा और यहां तक कि G-20 की विज्ञप्तियों में भी इसकी प्रतिध्वनि सुनाई दी, जिसने भारत को संयम और बातचीत के लिए एक विश्वसनीय आवाज के रूप में स्थापित किया।

डिजिटल इंडिया स्टैक और एआई मिशन के माध्यम से, नई दिल्ली का लक्ष्य जिम्मेदार प्रौद्योगिकी शासन को बढ़ावा देना, डिजिटल एकाधिकार का मुकाबला करना और साइबर लचीलापन बनाना है। उभरती हुई तकनीक, अंतरिक्ष और क्वांटम कंप्यूटिंग में अमेरिका और यूरोप के साथ भारत की साझेदारी एक ज्ञान महाशक्ति के रूप में इसकी भूमिका को और बढ़ाती है।

साथ ही, भारत की घरेलू नीतियाँ - शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, लैंगिक समानता और गरीबी उन्मूलन पर केंद्रित - यह दर्शाती हैं कि स्थायी शांति मानव विकास से शुरू होती है।

पिछले दो दशकों में करोड़ों लोगों को गरीबी से बाहर निकालने में इसकी सफलता आर्थिक विकास और सामाजिक समावेशन के बीच संतुलन बनाने का एक उदाहरण बन गई है।

रक्षा आत्मनिर्भरता और सामरिक स्थिरता : रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भर भारत के लिए भारत का प्रयास इसकी सामरिक स्वायत्तता की वैश्विक धारणा को नया आकार दे रहा है। तेजस लड़ाकू विमान, ब्रह्मोस मिसाइल और अरिहंत श्रेणी की परमाणु पनडुब्बी जैसी प्रणालियों के बढ़ते स्वदेशी विकास के साथ, भारत उन्नत हथियारों के एक प्रमुख आयातक से एक उभरते निर्यातक के रूप में परिवर्तित हो रहा है।

अमेरिका, फ्रांस, इजराइल, ऑस्ट्रेलिया और जापान जैसे मित्र देशों के साथ सहयोग भारत के तकनीकी आधार को बढ़ा रहा है और साथ ही क्षेत्रीय प्रतिरोध और वैश्विक हथियार संतुलन में योगदान दे रहा है।

जैसे-जैसे दुनिया नई हथियारों की होड़ और हाइब्रिड युद्ध देख रही है, भारत की रक्षा कूटनीति क्षमता निर्माण और सहयोग पर केंद्रित है, टकराव पर नहीं।

ऑपरेशन दोस्त (तुर्किये और सीरिया में भूकंप राहत) और संघर्ष क्षेत्रों में निकासी मिशन सहित इसके मानवीय अभियान, क्षमता को करुणा के साथ जोड़ते हुए रणनीतिक मानवतावाद के एक नए मॉडल को उजागर करते हैं।

मई 2025 में भारत का ऑपरेशन सिंदूर इस बात का एक आदर्श उदाहरण बन सकता है कि राष्ट्र आतंकवाद और आतंकवाद के प्रायोजकों से कैसे लड़ें, और साथ ही लक्ष्य प्राप्ति के बाद भी युद्ध रोकने का रणनीतिक आत्मविश्वास बनाए रखें।

भारत और उसके राजनीतिक नेतृत्व की परिपक्वता विपरीत परिस्थितियों में सही निर्णय लेने की क्षमता में निहित है - जिसमें ऑपरेशन सिंदूर जैसे संघर्ष को रोकना भी शामिल है - और परिणामों की जिम्मेदारी लेना, जिससे दुनिया को कुछ सबक सीखने को मिल सकते हैं।

भारत का आगे का रास्ता : एक उद्देश्यपूर्ण शांतिपूर्ण शक्ति : आज दुनिया संकटों के एक अतिव्यापी जाल का सामना कर रही है, भू-राजनीतिक तनाव, जलवायु परिवर्तन, खाद्य असुरक्षा और आर्थिक असमानता। इस अशांत परिदृश्य में, भारत का व्यावहारिक आदर्शवाद नैतिक स्पष्टता और रणनीतिक स्थिरता दोनों प्रदान करता है।

अहिंसा, लोकतंत्र और बहुलवाद की इसकी लंबी परंपरा भारत को एक ऐसी सौम्य शक्ति प्रदान करती है जिसकी किसी भी अन्य उभरते राष्ट्र से तुलना नहीं की जा सकती। महात्मा गांधी की मातृभूमि होने के नाते, भारत शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की विरासत रखता है, एक ऐसा सिद्धांत जिसे उसने कूटनीति और विकास के माध्यम से 21वीं सदी में सफलतापूर्वक अपनाया है।

भविष्य की ओर देखते हुए, भारत का वैश्विक योगदान तीन अनिवार्यताओं पर आधारित होगा-

1. बहुपक्षवाद को सुदृढ़ करना : वर्तमान वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों को पुनर्जीवित करना।

2. सतत विकास को बढ़ावा देना : आर्थिक महत्वाकांक्षा को पर्यावरणीय संरक्षण के साथ संतुलित करना।

3. गुट नहीं, पुल बनाना : प्रतिद्वंद्विता के बीच सहयोग को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष : वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत की भूमिका एक स्थिर, शांति-प्रवर्तक और अवसर-सृजनकारी शक्ति की है। आर्थिक नवाचार से लेकर रणनीतिक कूटनीति तक, इसके कार्य वैश्विक मानदंडों को तेज़ी से आकार देते हैं। भविष्य की ओर आत्मविश्वास से बढ़ते हुए, भारत केवल दुनिया में उभरने की कोशिश नहीं कर रहा है; यह विश्व को शांति, न्याय और साझा समृद्धि के सिद्धांतों को प्रतिबिंबित करने वाले विश्व के रूप में नया रूप देने का प्रयास कर रहा है। प्रधानमंत्री मोदी के शब्दों में, 'भारत का समय आ गया है; न केवल अपने उत्थान का, बल्कि भारत के माध्यम से विश्व के उत्थान का।' और उस उत्थान में एक अधिक शांतिपूर्ण, समतापूर्ण और समृद्ध वैश्विक व्यवस्था की आशा निहित है। ■

भौतिक विज्ञानी डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर मरणोपरांत 'विज्ञान रत्न पुरस्कार' से सम्मानित

ब्रह्मांड की उत्पत्ति का सत्य जानने की जिज्ञासा मानव जाति में सदैव से रही है। वर्ष 1927 में बेल्जियम के वैज्ञानिक जॉर्जेस लेमैत्रे द्वारा प्रतिपादित और बाद में अमेरिकी खगोलशास्त्री एडविन हबल द्वारा समर्थित महाविस्फोट सिद्धान्त (बिग बैंग), जिसके अनुसार, 'ब्रह्मांड का जन्म एक महाविस्फोट (बिग बैंग) के परिणामस्वरूप हुआ', को व्यापक स्वीकार्यता मिली।

वर्ष 1964 में बिग बैंग सिद्धांत को चुनौती देने वाले हॉयल-नार्लीकर सिद्धांत, जिसके अनुसार, 'ब्रह्मांड का न तो कोई आरंभ है न कोई अंत, यह हमेशा से अस्तित्व में रहा है और अनंत काल तक नए पदार्थों का निरंतर निर्माण होता रहा है' के प्रतिपादकों में से एक डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर को मरणोपरांत विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र का सर्वोच्च भारतीय सम्मान 'विज्ञान रत्न पुरस्कार' देने की घोषणा की गई है।

डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर 19 जुलाई 1938 को महाराष्ट्र के कोल्हापुर में जन्मे, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय तथा कैंब्रिज विश्वविद्यालय से शिक्षित हुए और 20 मई 2025 को स्वर्गवासी हुए। वह एक महान वैज्ञानिक होने के साथ ही लेखक भी थे, जिन्होंने विज्ञान फिक्शन और लोकप्रिय विज्ञान की अनेकों पुस्तकें लिखीं।

भीषण खतरे की चेतावनी है चरम मौसमी बदलाव

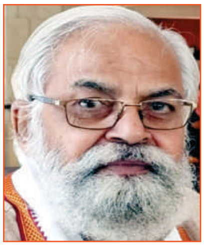

ज्ञानेन्द्र रावत
वरिष्ठ पत्रकार एवं पर्यावरणविद्

मौसमी बदलाव ने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया है। मौसमी चक्र में आ रहा यह अप्रत्याशित परिवर्तन न केवल जलवायु परिवर्तन का संकेत है, बल्कि इसके दुष्परिणाम अब हर स्तर पर स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे हैं। पिछले कुछ वर्षों में देश ने कहीं जरूरत से ज्यादा तो कहीं बेहद कम बारिश का सामना किया है। लगातार वर्षा और हिमपात ने मैदानी और पर्वतीय इलाकों में गर्मी से राहत तो दी है, लेकिन लोगों की परेशानियां बढ़ा दी हैं। चार दशक बाद अक्टूबर के पहले हफ्ते में ही उत्तराखंड की पहाड़ियां बर्फ से ढक गईं। लोग अक्टूबर में ही दिसम्बर जैसी सर्दी महसूस कर रहे हैं। पर्वतीय राज्यों में हिमपात से जनजीवन प्रभावित है। वैज्ञानिक इसे पश्चिमी विक्षोभ का परिणाम मानते हैं।

भारत जलवायु जोखिम सूचकांक 2025 में सबसे अधिक प्रभावित देशों में शामिल है। 1993 से 2022 के बीच सूखे, लू और अन्य चरम मौसमी घटनाओं से देश में 80 हजार से अधिक लोगों की मौत हुई और लगभग 180 अरब डॉलर का आर्थिक नुकसान हुआ। हाल ही में सांख्यिकीय एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय की रिपोर्ट "एनविस्टेट्स इंडिया 2025-पर्यावरण सांख्यिकी" के अनुसार, पिछले 25 वर्षों में चरम मौसमी घटनाओं में 269 प्रतिशत की विस्फोटक वृद्धि दर्ज की गई है। यह केवल मानवीय क्षति ही नहीं दिखाती, बल्कि जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभावों के प्रति चेतावनी भी है।

इस बार मानसून ने देश के अधिकांश हिस्सों में कहर बरपाया। अप्रत्याशित वर्षा के चलते बाढ़ और जलभराव ने सामान्य जीवन अस्त-व्यस्त कर दिया। उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पंजाब जैसे पर्वतीय राज्यों को इसका सबसे अधिक खामियाजा भुगतना पड़ा। मैदानी इलाकों में लगातार वर्षा के कारण जलभराव की समस्या बनी रही, तो वहीं राजस्थान तक में आफत की बारिश ने परेशान किया। दो सक्रिय पश्चिमी विक्षोभ, हरियाणा में चक्रवाती स्थितियां और बंगाल की खाड़ी में बने निम्न दबाव के क्षेत्र ने मिलकर स्थिति को और गंभीर बना दिया।

हिमालयी राज्यों में भूस्खलन की घटनाओं में तेजी का मुख्य कारण अनियंत्रित निर्माण है। बिना योजना के पर्यटन, सड़क और बांध परियोजनाओं ने पहाड़ों की स्थिरता पर गहरा असर डाला है। आपदा प्रबंधन की अपर्याप्तता और जनजागरूकता की कमी ने इन त्रासदियों को और बढ़ाया है। अब यह स्पष्ट हो गया है कि भारतीय मानसून की प्रकृति बदल चुकी है कभी सूखे जैसी स्थिति तो कभी रिकॉर्ड तोड़ वर्षा अब आम बात बन चुकी है। महासागरीय परिस्थितियां और क्षेत्रीय दबाव तंत्र मानसून को अप्रत्याशित बना रहे हैं।

इस बार दो पश्चिमी विक्षोभों का लंबे समय तक सक्रिय रहना और बंगाल की खाड़ी में निम्न दबाव क्षेत्र का बने रहना विनाशकारी बारिश का कारण बना। अनियोजित शहरीकरण, जल निकासी की कमी और कमजोर आधारभूत ढाँचे ने नुकसान को बढ़ाया। इसके साथ ही, ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन, वनों की कटाई और औद्योगिक प्रदूषण वैश्विक तापमान को निरंतर बढ़ा रहे हैं। आईपीसीसी की रिपोर्ट बताती है कि मानवीय गतिविधियों से उत्सर्जित गैसों ने गर्मी की लहरों, असामान्य वर्षा और चक्रवातों की तीव्रता को कई गुना बढ़ा दिया है।

पृथ्वी की धुरी लगभग 23.5 डिग्री झुकी हुई है, जिसके कारण पृथ्वी के विभिन्न

हिस्सों को वर्ष भर अलग-अलग मात्रा में सूर्य की किरणें मिलती हैं। यही झुकाव ऋतुओं में परिवर्तन का मूल कारण है। यह कोण लगभग हर 41,000 वर्षों में 22.1 डिग्री से 24.5 डिग्री के बीच बदलता है। जब यह कोण बढ़ता है, तो गर्मियां अधिक गर्म और सर्दियां अधिक ठंडी हो जाती हैं। वैज्ञानिक अनुमान लगा रहे हैं कि वर्तमान दर से ऊर्जा उपयोग और ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के चलते अगले दो दशकों में वैश्विक तापमान 2 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है। यह पेरिस समझौते के उस लक्ष्य को असंभव बनाता दिख रहा है, जिसमें तापमान को पूर्व-औद्योगिक स्तर से दो डिग्री नीचे रखने की बात कही गई थी।

तेजी से बढ़ता तापमान आर्कटिक की बर्फ को पिघला रहा है, जिससे समुद्र के स्तर में वृद्धि और पारिस्थितिक असंतुलन की आशंका बढ़ रही है। वैज्ञानिकों का मानना है कि यदि यह रुझान जारी रहा तो अगले 20-30 वर्षों में अटलांटिक महासागर की प्रमुख परिसंचरण प्रणाली। tlantic Meridional Overturning Circulation बाधित हो सकती है, जिसका सीधा असर विश्व के मौसम पर पड़ेगा।

वायुमंडलीय दबाव, तापमान और आर्द्रता में होने वाले बदलाव भी मौसमी अस्थिरता को बढ़ा रहे हैं। उच्च दबाव से निम्न दबाव की ओर चलने वाली हवाएं उष्मा और नमी को स्थानांतरित करती हैं, जिससे भारी वर्षा या सूखा जैसी चरम घटनाएं घटित होती हैं। मौजूदा मौसमीय उतार-चढ़ाव महासागरीय घटनाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। प्रशांत महासागर में एल-नीनो कमजोर पड़ रहा है और ला-नीना की संभावना बढ़ रही है, जिसने मानसून को इस वर्ष असामान्य रूप से सक्रिय किया। यही कारण था कि सितंबर में भीषण वर्षा की भयावहता देखने को मिली।

अत्यधिक तापमान और चरम मौसमी घटनाएं मानव स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल रही हैं। लगातार बढ़ती गर्मी न केवल कमजोर वर्गों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही है, बल्कि नींद, कार्यक्षमता और मानसिक संतुलन को भी बाधित कर रही है। जलस्रोत सूख रहे हैं, जिससे उनसे जुड़े जीव-जंतु और पारिस्थितिक तंत्र संकट में हैं। सूखे और गर्मी के कारण आग लगने के खतरे बढ़े हैं, जबकि बाढ़ और वर्षा से कृषि उत्पादन पर भी गंभीर असर पड़ा है।

सामाजिक दृष्टि से देखा जाए तो महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग ऐसे मौसमीय बदलावों से सर्वाधिक प्रभावित होते हैं। गर्मी की लहरें हृदय रोगों और श्वसन तंत्र से जुड़ी बीमारियों को बढ़ाती हैं, जबकि बाढ़ जैसी स्थितियां संक्रामक रोगों के प्रसार का कारण बनती हैं। इन परिस्थितियों में देश की स्वास्थ्य एजेंसियों और स्थानीय प्रशासन की जिम्मेदारी कई गुना बढ़ जाती है।

वर्तमान समय में मौसमी बीमारियां जैसे डेंगू, मलेरिया, वायरल संक्रमण और टायफायड तेजी से फैल रहे हैं। डब्ल्यूएचओ के अनुसार, हर साल विश्वभर में लगभग 6. 5 लाख लोग इन्फ्लूएंजा के कारण मृत्यु को प्राप्त होते हैं। अमेरिका की स्टैनफोर्ड और हार्वर्ड विश्वविद्यालयों के शोधार्थियों के अनुसार, एशिया और अमेरिका के 21 देशों में 1995 से 2014 के बीच जलवायु परिवर्तन के चलते डेंगू के मामलों में 18 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस अवधि में हर साल औसतन 46 लाख नए मामले सामने आए। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि अगले 25 वर्षों में इनकी संख्या तीन गुना से अधिक हो सकती है।

जलवायु परिवर्तन अब केवल पर्यावरणीय नहीं, अपितु मानवीय संकट बन चुका है। अनियोजित विकास, ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन और प्राकृतिक संसाधनों से छेड़छाड़ ने मौसम को अप्रत्याशित बना दिया है। यदि अभी ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाले वर्षों में भारत समेत पूरी दुनिया को विनाशकारी परिणाम झेलने पड़ेंगे।

भारत में भी डेंगू, चिकनगुनिया और मलेरिया जैसी बीमारियां जलवायु परिवर्तन की वजह से अपने प्रसार क्षेत्र बढ़ा रही हैं। बढ़ते तापमान और असामान्य वर्षा ने मच्छरों के प्रजनन चक्र को और तेज कर दिया है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने राज्यों को सतर्कता बरतने के निर्देश दिए हैं, लेकिन असली चुनौती मच्छरों को पनपने से रोकने और जन-जागरूकता बढ़ाने की है। अगर निवारक उपाय समय रहते नहीं अपनाए गए, तो मौसम से जुड़ी बीमारियों का खतरा गंभीर रूप ले सकता है।

यह निर्विवाद सत्य है कि जलवायु परिवर्तन वायुमंडल को गर्म कर रहा है और उसकी नमी धारण क्षमता बढ़ा रहा है। इसी से भारी वर्षा, चक्रवात और ताप लहरों की आवृत्ति बढ़ रही है। वैज्ञानिक लगातार चेतावनी दे रहे हैं कि यदि तुरंत और समन्वित वैश्विक कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाले दशकों में पृथ्वी का पारिस्थितिक संतुलन स्थायी रूप से बिगड़ सकता है।

भारत जैसे विकासशील देश के लिए यह खतरा और बड़ा है क्योंकि यहां जनसंख्या घनत्व अधिक है, संसाधन सीमित हैं और आपदा प्रबंधन प्रणाली अभी भी कमजोर है। जरूरत इस बात की है कि हम विकास की नीतियों में जलवायु दृष्टिकोण को शामिल करें, अनियोजित निर्माण पर रोक लगाएँ और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दें।

अंततः यह समझना जरूरी है कि मौसम के इन चरम बदलावों के पीछे केवल प्राकृतिक नहीं अपितु मानवीय कारण भी समान रूप से जिम्मेदार हैं। यदि हमने अपने जीवन और विकास के तौर-तरीके नहीं बदले, तो आने वाले वर्षों में यह संकट और भी विकराल रूप ले सकता है। समय रहते कदम उठाना ही हमारे और आने वाली पीढ़ियों के अस्तित्व की गारंटी है। ■

कोडेड कमांडर्स
कृत्रिम बुद्धिमत्ता नए जनरल के रूप में

डॉ. निशाकांत ओझा
रक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा के अग्रणी रणनीतिकार

युद्ध की बदलती परिभाषा : अब युद्ध केवल खाइयों, टैंकों और सीमाओं तक सीमित नहीं है। इक्कीसवीं सदी की युद्धभूमि अब कोड, एल्गोरिद्म, उपग्रहों और क्वांटम सिग्नलों पर स्थानांतरित हो गई है। इस नए युग में निर्णय केवल कमांड रूम में बैठे जनरल नहीं लेते, बल्कि मशीन लर्निंग सिस्टम भी लेते हैं जो वास्तविक समय के एक टेराबाइट डेटा को पढ़कर निर्णय देते हैं।

अमेरिका और चीन ने इस परिवर्तन को स्पष्टता और तात्कालिकता के साथ अपनाया है और कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर प्रभुत्व, क्वांटम नेटवर्क और मानव रहित प्रणालियों में अभूतपूर्व संसाधन झोंक दिए हैं। भारत के लिए, जिसके दो शत्रुतापूर्ण सीमांत और समुद्री कमजोरियां हैं, यह आवश्यकता और भी गहरी है। सवाल यह नहीं है कि भारत को आधुनिकीकरण करना चाहिए या नहीं, बल्कि यह है कि क्या भारत इतनी तेजी से कर सकता है कि भविष्य के युद्धों में, जहां पहली गोली साइबरस्पेस या अंतरिक्ष से चल सकती है, जीवित रह सके।

युद्ध में एल्गोरिद्म : कमांड और कंट्रोल की नई परिभाषा - कृत्रिम बुद्धिमत्ता अब सैन्य आधुनिकीकरण की नई परिभाषा बन गई है। अमेरिका अपने कमांड और कंट्रोल सिस्टम में एआई को सम्मिलित कर रहा है, जहां युद्धभूमि सिमुलेशन को भविष्यवाणी विश्लेषण (प्रेडिक्टिव एनालिटिक्स) से जोड़कर कमांडरों को निर्णयात्मक श्रेष्ठता प्रदान की जा रही है। एआई-आधारित ISR (इंटेलिजेंस, सर्विलांस, रिकॉनसेंस) अब पेंटागन की रणनीतिक सिद्धांत का अभिन्न हिस्सा बन चुका है, जिसमें मानव रहित प्रणालियां युद्धक्षेत्र से विशाल डेटा वास्तविक समय में निर्णय नेटवर्क तक पहुंचाती हैं। दूसरी ओर, चीन "बुद्धिमत्तायुक्त युद्ध" की दिशा में आक्रामक रूप से अग्रसर है। वहां एआई-आधारित युद्धाभ्यास, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध और भविष्यवाणी करने वाले निर्णय तंत्र तीव्र गति से विकसित हो रहे हैं। चीनी कंपनियां, PLA के सहयोग से, स्वचालित टार्गेटिंग, तीव्र सिमुलेशन और बिग डेटा आधारित मनोवैज्ञानिक अभियानों के लिए एआई उपकरण तैयार कर रही हैं। भारत ने भी रक्षा स्टार्टअप्स और अनुसंधान एजेंसियों के माध्यम से उल्लेखनीय कदम उठाए हैं- एआई-आधारित बैटलफील्ड मैनेजमेंट सिस्टम, प्रेडिक्टिव लॉजिस्टिक्स और स्वदेशी ड्रोन प्लेटफॉर्म जैसे प्रयास अत्यंत आशाजनक हैं, किंतु इनका पैमाना अभी भी अमेरिका

और चीन की तुलना में अपेक्षाकृत छोटा है।

अदृश्य युद्धक्षेत्र : साइबर डोमेन नई अग्रिम पंक्ति - यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) भविष्य के युद्ध का मस्तिष्क है, तो साइबर उसका रक्तप्रवाह कहा जा सकता है। अमेरिका के पास विश्व की सबसे विकसित और परिपक्व आक्रामक साइबर क्षमता है। उसका "परसिस्टेंट एंगेजमेंट" सिद्धांत यह सुनिश्चित करता है कि शत्रु सदैव रक्षात्मक स्थिति में रहे।

दूसरी ओर, चीन ने साइबर-सक्षम जासूसी और दीर्घकालिक नेटवर्क घुसपैठ की कला में अभूतपूर्व दक्षता प्राप्त की है। वह बौद्धिक संपदा की चोरी से लेकर रणनीतिक प्रणालियों को बाधित करने तक अपनी गतिविधियाँ फैला चुका है।

भारत का साइबर दृष्टिकोण फिलहाल मुख्यतः रक्षात्मक है। डिफेंस साइबर एजेंसी की स्थापना और महत्वपूर्ण अवसंरचना की सुरक्षा पर बढ़ता ध्यान निश्चित रूप से सही दिशा में एक कदम है, किंतु अब समय आ गया है कि भारत एक स्पष्ट और सशक्त आक्रामक साइबर सिद्धांत भी विकसित करे, ताकि भविष्य के डिजिटल युद्धक्षेत्र में उसकी रणनीतिक स्थिति और मजबूत हो सके।

क्वांटम डॉन : अदृश्य को सुरक्षित करने की दौड़ - क्वांटम तकनीक युद्ध के भविष्य का अगला निर्णायक मोड़ बनने जा रही है। यह सुरक्षित संचार, अत्यधिक तीव्र कंप्यूटिंग और शक्तिशाली डिक्रिप्शन क्षमताएं प्रदान करती है। इस क्षेत्र में अमेरिका और चीन अग्रणी हैं- विशेषकर चीन, जिसने उपग्रह-आधारित क्वांटम संचार का सफल प्रदर्शन कर अपनी तकनीकी बढ़त दिखाई है। भारत ने भी ISRO और राष्ट्रीय क्वांटम मिशन के माध्यम से इस दिशा में कदम बढ़ाए हैं, किंतु यह प्रयास अभी प्रारंभिक चरण में हैं। यदि प्रयोगशालाओं और रक्षा अनुप्रयोगों के बीच की खाई शीघ्र नहीं पाटी गई, तो भारत इस उभरते तकनीकी दौड़ में पिछड़ सकता है।

अंतरिक्ष का सैन्यीकरण और बहु-क्षेत्रीय युद्ध : भविष्य की युद्धभूमि अब केवल भूमि, समुद्र और वायु तक सीमित नहीं रही- यह अब अंतरिक्ष तक विस्तारित हो चुकी है। अमेरिका ने "स्पेस फोर्स" का गठन कर अपनी अंतरिक्ष प्रभुता सुदृढ़ करने की दिशा में कदम उठाए हैं। वहीं चीन ने एंटी-सैटेलाइट (ASAT) हथियारों का सफल परीक्षण कर अपनी महत्वाकांक्षा स्पष्ट कर दी है। भारत ने 2019 में "मिशन शक्ति" के माध्यम से ASAT क्षमता साबित की, पर समग्र अंतरिक्ष सैन्यीकरण में भारत की चाल अभी अधिकतर प्रतिक्रियात्मक रही है।

हाइपरसोनिक्स, मानव रहित प्रणालियां और भविष्य का शस्त्रागार : हाइपरसोनिक हथियार और उन्नत मानव रहित (ड्रोन) प्रणालियां अगली पीढ़ी की निर्णायक क्षमताएं हैं। अमेरिका और चीन दोनों ही क्षेत्रों में तीव्र प्रगति कर रहे हैं। भारत रूस के साथ ब्रह्मोस-II पर काम कर रहा है और घरेलू ड्रोन स्टार्टअप्स भी सक्रिय हैं, फिर भी मौजूदा पैमाना और तैनाती वैश्विक प्रतिस्पर्धा से पीछे दिखती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अब सैन्य आधुनिकीकरण की नई परिभाषा बन गई है। अमेरिका अपने कमांड और कंट्रोल सिस्टम में एआई को सम्मिलित कर रहा है, जहां युद्धभूमि सिमुलेशन को भविष्यवाणी विश्लेषण (प्रेडिक्टिव एनालिटिक्स) से जोड़कर कमांडरों को निर्णयात्मक श्रेष्ठता प्रदान की जा रही है। एआई-आधारित ISR (इंटेलिजेंस, सर्विलांस, रिकॉनसेंस) अब पेंटागन की रणनीतिक सिद्धांत का अभिन्न हिस्सा बन चुका है, जिसमें मानव रहित प्रणालियां युद्धक्षेत्र से विशाल डेटा वास्तविक समय में निर्णय नेटवर्क तक पहुंचाती हैं।

भारत का उदय : वादे और विरोधाभास - "आत्मनिर्भर भारत" जैसी पहलों ने रक्षा नवाचार को बढ़ावा दिया है। भारत की ASAT सफलता, बढ़ता साइबर ढांचा और एआई अनुसंधान उल्लेखनीय उपलब्धियां हैं। फिर भी वास्तविक समस्या यह है कि महत्वाकांक्षा तो मौजूद है पर उसे पूर्ण पैमाने पर एकीकृत करने की व्यवस्था अभी कमजोर है - बजटीय सीमाएं, नौकरशाही की धीमी गति और त्रि-सेनाओं के बीच समन्वय की कमी बड़ी बाधाएँ बनी हुई हैं।

भविष्य का युद्ध : तकनीकों का अभिसरण - आने वाला युद्ध पारंपरिक मुठभेड़ की बजाय तकनीकों के संगम के रूप में होगा। एआई वास्तविक-समय निर्णय लेगा, क्वांटम तकनीक संचार को सुरक्षित बनाएगी, साइबर ऑपरेशन शत्रु के ढांचे को घुटन पहुंचाएंगे, अंतरिक्ष पर नियंत्रण युद्ध की गति तय करेगा और हाइपरसोनिक हथियार सेकंडों में निर्णायक पल बदल देंगे।

पीछे से आगे : भारत की रणनीतिक आवश्यकता - भारत एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है- विकल्प स्पष्ट है, प्रतिक्रिया करने वाली शक्ति बनकर रहना या अग्रणी शक्ति बनना। अमेरिका और चीन पहले ही "एल्गोरिदमिक युद्ध" के सिद्धांत लिख रहे हैं। भारत को अपनी लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं, तकनीकी प्रतिभा और भौगोलिक लाभ का उपयोग करते हुए एक अलग लेकिन निर्णायक रास्ता अपनाना होगा।

भविष्य के युद्ध बिना गोली चले जीते-हारे जा सकेंगे; इसलिए भारत का लक्ष्य सिर्फ पकड़ने का नहीं, नेतृत्व करने का होना चाहिए। तेज, साहसी और समेकित निर्णय-तन्त्र ही इस दिशा की कुंजी होंगे। ■

वर्तमान वैश्विक नेतृत्व में विश्व कल्याण के भाव का अभाव है

प्रहलाद सबनानी
सेवानिवृत्त पूर्व उप प्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक

आज विश्व के कुछ देशों में सत्ता उस विचारधारा के दलों के पास आ गई है जो शक्ति के मद में चूर हैं एवं अपने लिए प्रशंसा प्राप्त करना चाहते हैं। उनके विचारों में विश्व कल्याण की भावना का पूर्णतः अभाव है। इन देशों के नेतृत्व की कार्यप्रणाली से कुछ देशों के बीच आपस में टकराव पैदा होता दिखाई दे रहा है। दो देशों के बीच की समस्याओं को हल करने के प्रयास के स्थान पर किसी एक देश का पक्ष लेकर दूसरे देश के विरुद्ध खड़े हो जाना भी इन देशों की कार्यप्रणाली का हिस्सा बनता जा रहा है। इस कार्यप्रणाली से कुछ देशों के बीच आपस में युद्ध की स्थिति निर्मित हो रही है। इजराईल-ईरान के बीच एवं रूस-यूक्रेन के बीच तथा कम्बोडिया-थाईलैंड के बीच छिड़ा हुआ युद्ध इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। दरअसल, दो देशों के बीच युद्ध छिड़ने से चौधराहट करने वाले देशों द्वारा अपने देश में निर्मित हथियारों को युद्ध करने वाले देशों को बेचा जाता है जिससे इन देशों में प्रभावशाली लाबी संतुष्ट होती है और वह इन देशों में चुनाव के समय राजनैतिक दलों की मदद करने का प्रयास करती है। पूंजीवादी देशों में कोरपोरेट जगत द्वारा ही सत्ता की स्थापना की जाती है। सत्ता प्राप्त करने के बाद इन्हीं राजनैतिक दलों द्वारा इस कोरपोरेट जगत के हितों को साधने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार इन देशों में राजनैतिक दलों एवं कोरपोरेट जगत का एक नेक्सस अपने-अपने हितों का ध्यान रखने के लिए सक्रिय रहता है। अमेरिका में भी आज यही स्थिति दिखाई दे रही हैं। अमेरिका में हथियारों का उत्पादन करने वाली कम्पनियों की, वर्तमान सत्ता के गलियारे में, अच्छी पैठ दिखाई देती है।

वर्तमान वैश्विक नेतृत्व द्वारा विश्व कल्याण पर विचार किए जाने एवं छोटे-छोटे अविकसित एवं विकासशील देशों की अर्थव्यवस्थाओं की सहायता किए जाने के स्थान पर अन्य देशों, जिनके नेता इन तथाकथित विकसित देशों की अमानवीय शर्तों पर ध्यान नहीं दे रहे हैं, की अर्थव्यवस्थाओं को बर्बाद किये जाने की धमकियां तक दी जा रही हैं। यूरोपीयन यूनियन के अध्यक्ष ने भारत की अर्थव्यवस्था को बर्बाद करने की धमकी इसलिए दी है क्योंकि भारत, रूस से कच्चे तेल का आयात करता है। इसी प्रकार, ट्रम्प प्रशासन द्वारा भारत एवं रूस की अर्थव्यवस्थाओं को मृत अर्थव्यवस्था की श्रेणी का बताया है एवं भारत द्वारा अमेरिका में किए जाने वाले निर्यात पर 25 प्रतिशत का टैरिफ 1 अगस्त 2025 से लागू कर दिया है क्योंकि भारत, रूस से कच्चे तेल एवं सुरक्षा उपकरणों का भारी मात्रा में आयात करता है। जबकि, भारत एवं अमेरिका के बीच द्विपक्षीय व्यापार संधि अपने अंतिम चरण में हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक पूजनीय श्री गुरुजी (श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर) ने आज से 65/70 वर्ष पूर्व ही साम्यवादी एवं पूंजीवादी विचारधारा पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा था कि "न तो साम्यवाद और न ही पूंजीवाद संसार को एक सूत्र में बांध सकेंगे। इसके पीछे उन्होंने कुछ बुनियादी कारण बताए थे। भौतिकवादी दर्शन, जो मनुष्य को एक प्राणी मात्र समझता है और मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति को ही सर्वोच्च लक्ष्य मानता है, वह मनुष्य में स्पर्धा और संघर्ष का भाव तो उत्पन्न कर सकता है, उसमें एकता और सौहार्द पैदा नहीं कर सकता। कारण स्पष्ट है – भौतिकता की भूमि पर मतभेद और मार्गों की भिन्नता अनिवार्य हो जाती है। वे अलगाव और वर्चस्व की धारा को बल प्रदान करते हैं। जो लोग संसार को भौतिकता के यथार्थ से देखते हैं

उनके लिए समन्वय और एकात्मता का कोई महत्व नहीं है। वे सहयोग के विषय में सोच ही नहीं सकते। यह तो भारत की दृष्टि है, जब हम इन विभिन्नताओं के भीतर छिपी आंतरिक एकता का अनुभव करते हैं, जब हम सम्पूर्ण एकात्मता की अनुभूति कर पाते हैं। भौतिकवादी दृष्टिकोण में हम अपना अलग और बिरला अस्तित्व समझने लगते हैं, जिनमें पारस्परिक प्रेम और अपनत्व का कोई स्थान नहीं होता। ऐसे प्राणियों में अपनी स्वार्थपरता पर नियंत्रण करने और समस्त मानवजाति की भलाई में बाधक तत्वों को नष्ट करने की भी कोई प्रेरणा नहीं होती हैं।"आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों की सत्ता में बैठे विभिन्न राजनैतिक दलों की स्थिति को देखते हुए, 65/70 वर्ष पूर्व प्रकट किए गए पूजनीय गुरुजी के उक्त विचार आज कितने सटीक बैठते हैं।

पूजनीय श्री गुरुजी का यह दृढ़ विश्वास था कि भारतीय जीवन पद्धति ही एक मात्र ऐसी पद्धति है जो सामाजिक विकास को अवरुद्ध किए बिना वैयक्तिक स्वतंत्रता को सुनिश्चित करती है। पश्चिमी दर्शन दो पद्धतियों पर विश्वास करता है - लोकतंत्र और साम्यवाद। लोकतंत्र ने स्वार्थ परता को बढ़ावा दिया और एक मनुष्य को दूसरे के विरुद्ध खड़ा कर दिया। यह सर्वविदित है। इसमें मनुष्य के लिए कहीं भी शांति नहीं है। इस व्यवस्था में आध्यात्मिकता के विकास का कोई अवसर अथवा मार्ग नहीं है। आत्म-प्रशंसा और पर निंदा जो प्रायः चुनावों के समय देखी जा सकती है, आध्यात्मिकता की हत्या कर देती है। यह विचार भारत की वर्तमान राजनैतिक स्थिति पर भी सटीक बैठते हैं। दूसरी ओर, साम्यवाद मस्तिष्क को एक ही विचारधारा से ग्रसित कर देता है। यह मनुष्य की वैयक्तिकता का विनाश कर देता है किन्तु मनुष्य केवल पशु नहीं है जो खाते पीते है और संतानोत्पति मात्र करते हैं। मनुष्य में सोचने, विचारने, चिंतन एवं मनन करने की शक्ति भी होती है जिसके माध्यम से कर्म एवं अर्थ सम्बंधी कार्य को धर्म के साथ जोड़कर सम्पन्न करने की क्षमता विकसित होती है। इस शक्ति को भौतिक वस्तुओं की सम्पन्नता के बीच भी प्राप्त किया जा सकता है यदि व्यक्ति का झुकाव आध्यात्म की ओर हो।

पूंजीवादी एवं साम्यवादी विचारधारा के ठीक विपरीत भारतीय दर्शन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक एकता को परस्पर आश्रितता के माध्यम से दोनों को ही सुनिश्चित किया गया है। प्राचीन काल में भारत के नागरिक आर्थिक दबाव से मुक्त रहते थे, क्योंकि किसी भी परिवार में शिशु के जन्म के साथ ही उसे एक पुश्तैनी व्यवसाय को चलायमान रखने की गारंटी रहती थी।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक पूजनीय श्री गुरुजी (श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर) ने आज से 65/70 वर्ष पूर्व ही साम्यवादी एवं पूंजीवादी विचारधारा पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा था कि- न तो साम्यवाद और न ही पूंजीवाद संसार को एक सूत्र में बांध सकेंगे। इसके पीछे उन्होंने कुछ बुनियादी कारण बताए थे। भौतिकवादी दर्शन, जो मनुष्य को एक प्राणी मात्र समझता है और मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति को ही सर्वोच्च लक्ष्य मानता है, वह मनुष्य में स्पर्धा और संघर्ष का भाव तो उत्पन्न कर सकता है, उसमें एकता और सौहार्द पैदा नहीं कर सकता।

उस खंडकाल में परिवार में पुश्तैनी व्यवसाय को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी आने वाली पीढ़ी के कंधो पर रहती थी। अतः युवा पीढ़ी पर आर्थिक दृष्टि से दबाव अथवा तनाव नहीं रहता था। अब तो पश्चिमी दार्शनिक भी भारतीय आर्थिक दर्शन के विभिन्न आयामों पर गम्भीरता से विचार करने लगे हैं। दरअसल, इसी पद्धति के चलते भारत में वर्ण व्यवस्था (क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र एवं ब्राह्मण) पनपी थी जिसे बाद में अंग्रेजों ने दुर्भावनावश जाति व्यवस्था का नाम दे दिया था तथा हिंदू समाज में जाति व्यवस्था के नाम पर तथाकथित विभिन्न जातियों (अंग्रेजी शासन की देन) के बीच आपस में मतभेद पैदा करने में सफलता पाई थी ताकि उन्हें भारत पर अपना शासन स्थापित करने में आसानी हो।

वैश्विक स्तर पर पूंजीवादी एवं साम्यवादी व्यवस्थाओं में आ रही समस्याओं के समाधान में असफल रहने के बाद अब कई देश भारत के दर्शन पर रिसर्च कर रहे हैं एवं इस व्यवस्था को अपने देश में लागू करने पर गम्भीरता से विचार कर रहे हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी लगातार इस बात को दोहराता रहा है कि सनातन हिंदू संस्कृति के संस्कारों से ही विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है। अतः भारत का विश्व गुरु बनना केवल भारत के लिए ही नहीं बल्कि विश्व के भले के लिए भी आवश्यक है। भारत में पनपी हिंदू सनातन संस्कृति मनुष्य को सांसारिक आवश्यकताओं से चिंतामुक्त करके ईश्वरोन्मुखी बनाती है। भारत में समस्त वर्णों में उच्च श्रेणी के संत महात्माओं का जन्म हुआ है। यही कारण है कि सभी जातियों में आध्यात्मिकता के आधार स्तम्भ पर खड़ा यह एक आश्चर्यजनक लोकतंत्र है। इस पृष्ठभूमि में भारत में सभी नागरिक समान और एकात्म हैं। इसी आध्यात्म के बल पर कालांतर में भारत विश्व गुरु बन गया था। आज के परिप्रेक्ष्य में एक बार पुनः पूरे विश्व को भारतीय आध्यात्म की आवश्यकता है। ■

भारत में बढ़ती मुस्लिम आबादी कारण और चुनौतियां

डॉ. अभिषेक प्रताप सिंह
सहायक प्रोफेसर, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विवि.

जनगणना और शोध रिपोर्टों से पता चलता है कि भारत में मुस्लिम आबादी में निरंतर वृद्धि हो रही है। भारत में बांग्लादेशी और पाकिस्तानी घुसपैठियों का मुद्दा फिर से गरमाने लगा है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार (10 अक्टूबर, 2025) को एक कार्यक्रम में दिए अपने भाषण में इस विषय पर अहम टिप्पणी की, जिसके बाद राजनीतिक हलचल बढ़ गई है। दिल्ली में अपने संबोधन में अमित शाह ने देश में मुस्लिम समुदाय की बढ़ती आबादी को लेकर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि मुस्लिम आबादी में वृद्धि का कारण अधिक प्रजनन नहीं है, बल्कि पाकिस्तान और बांग्लादेश से होने वाली घुसपैठ है।

भारत में मुस्लिम जनसंख्या का बढ़ता अनुपात हाल के वर्षों में जनसांख्यिकीय और सामाजिक विमर्श का एक प्रमुख विषय बन गया है। 2025 तक के आकलन के अनुसार, देश की कुल जनसंख्या में मुस्लिम समुदाय की हिस्सेदारी लगभग 15 प्रतिशत के आसपास पहुंच चुकी है, जो कि पिछले दशक की तुलना में वृद्धि दर्शाती है। यह वृद्धि विशेष रूप से उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, असम, बिहार और केरल जैसे राज्यों में अधिक परिलक्षित होती है, जहां मुसलमान बड़े सामाजिक समूह के रूप में मौजूद हैं।

मुस्लिम आबादी में वृद्धि : भारत में मुस्लिम आबादी की वृद्धि एक जटिल सामाजिक-आर्थिक विषय है, जिसमें कई कारण और प्रभाव जुड़े हुए है। सबसे प्रमुख कारण है उनकी उच्च जन्मदर। भारत में अन्य धार्मिक समुदायों की तुलना में मुस्लिम परिवारों में औसत जन्मदर अधिक पाया गया है। ग्रामीण इलाकों में शिक्षा की कमी, परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता का अभाव, और स्वास्थ्य सुविधाओं की सीमित उपलब्धता जन्मदर को प्रभावित करती है। मुस्लिम परिवारों में अक्सर बड़े परिवारों को सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से अधिक स्वीकार्यता मिलती है। युवा आबादी अधिक होने पर जन्मदर स्वाभाविक रूप से अधिक होता है।

इसका एक और कारण मुस्लिम आबादी का गैर कानूनी प्रवास भी है जो बॉर्डर के इलाको में होता है प्रवास मुख्यत: सीमाओं के पार से आने वाले अवैध प्रवासियों की वजह से बढ़ रहा है। यह अवैध प्रवास न केवल राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बन रहा है, बल्कि इससे सामाजिक और आर्थिक असंतुलन भी पैदा हो रहा है। अनैतिक तरीके से सीमा पार करने वाले ये लोग गैरकानूनी तौर पर देश में प्रवेश कर जीवन यापन करते हैं, जिससे स्थानीय संसाधनों और सेवाओं पर दबाव बढ़ता है। इसके साथ ही, इनके जरिये आतंकवाद और हिंसक गतिविधियों के खतरे भी बढ़ रहे हैं। कई बार अवैध प्रवासियों को आतंकवादी नेटवर्कों से जोड़ कर देखा गया है, जो समस्या को और बढ़ाते हैं।

बंगाल में बढ़ी मुस्लिम आबादी और हिंसा की कई उदाहरण हमारे सामने हैं, वर्ष 2018 और 2019 में आसनसोल और भाटपाराशहरों में घातक हिंदू विरोधी हिंसा देखी गई, जिसमें भाटपारा सांप्रदायिक तनाव का केंद्र बन गया। इसके पीछे वहां की आबादी में बड़ी सख्या में मुस्लिम जनसंख्या का होना देखा गया। ये सब लोग बांग्लादेश से पलायन करके गैर क़ानूनी तरीके से भारत आये थे। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की कुल जनसंख्या में मुस्लिम आबादी का हिस्सा लगभग 14.2 प्रतिशत है। यह आबादी देश की कुल आबादी का एक बड़ा हिस्सा है और निरंतर बढ़ती जा रही है। Pew Research Center और अन्य विश्वसनीय संस्थानों की रिपोर्टों में यह पाया गया है कि मुस्लिम समुदाय की जन्मदर अन्य समुदायों की तुलना में अधिक रही है। परिवार नियोजन के प्रति सामाजिक और धार्मिक मान्यताएं भी एक चुनौती हैं। कई मुस्लिम परिवार परिवार नियोजन को धार्मिक दृष्टि से नकारात्मक मानते हैं या इससे जुड़ी भ्रांतियां रखते हैं।

इससे वे आधुनिक परिवार नियोजन तकनीकों को अपनाने से कतराते हैं।

घुसपैठ और आंतरिक सुरक्षा : भारत में मुस्लिम प्रवासन और उसके आंतरिक सुरक्षा पर प्रभाव का मुद्दा एक जटिल और संवेदनशील विषय है, जो सामाजिक, आर्थिक, और रणनीतिक दृष्टिकोण से गहराई से जुड़ा हुआ है। 1947 के विभाजन के बाद से ही भारत की सीमाएं-विशेषकर बांग्लादेश, पाकिस्तान और म्यांमार की दिशा में-आव्रजन से प्रभावित रही हैं। इन प्रवासों ने कई बार भारत की जनसांख्यिकीय संरचना, विशेषकर पूर्वोत्तर और सीमा राज्यों में, गंभीर परिवर्तन उत्पन्न किए हैं । असम, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा और बिहार जैसे राज्य लगातार सीमा पार मुस्लिम प्रवासियों के दबाव का सामना कर रहे हैं। यह प्रवासन केवल आर्थिक कारणों से प्रेरित नहीं है, बल्कि अवैध बांग्लादेशी मुस्लिमों की लगातार आमद ने इन क्षेत्रों की सांस्कृतिक और भाषाई पहचान को भी प्रभावित किया है।

"बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स" की रिपोर्टों में इन प्रवासों को राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा के लिए संभावित खतरा बताया गया है, क्योंकि ये आबादी बदलाव राजनीतिक संतुलन और स्थानीय संसाधनों पर विवाद को जन्म देते हैं। अवैध मुस्लिम प्रवास का एक बड़ा असर राजनीतिक ध्रुवीकरण के रूप में भी देखा जा रहा है। सीमांत जिलों में मतदाता संरचना बदलने के कारण स्थानीय राजनीतिक दलों की नीतियों में परिवर्तन देखा जा रहा है, जिससे असम, त्रिपुरा और बंगाल जैसे राज्यों में जातीय और धार्मिक तनाव बढ़ा है । इससे न केवल सामाजिक अस्थिरता फैलती है, बल्कि उग्रवादी संगठनों को भी समर्थन और जनाधार जुटाने का अवसर मिलता है।

सेक्युलरिज्म के नाम पर अल्पसंख्यक समुदायों, विशेषकर मुस्लिमों, को विशेष लाभ देने की प्रवृत्ति को लेकर यह धारणा बनती रही कि इससे देश में बहुसंख्यक समुदाय की भावनाओं की अनदेखी की जाती है और राष्ट्रीय एकता बाधित होती है। आलोचकों के अनुसार, अल्पसंख्यक तुष्टिकरण भारतीय राजनीति में वोट बैंक के रूप में उपयोग किया जाता है। इस नीति के तहत कई बार विवादस्पद धार्मिक व सामाजिक मांगों को संवैधानिक संरक्षण के नाम पर बढ़ावा मिलता है, जिससे देश में सांप्रदायिक ध्रुवीकरण और सामाजिक टकराव को बल मिलता है। उदाहरणस्वरूप, मुस्लिम पर्सनल लॉ, शिक्षा संस्थानों की आरक्षण नीति, और धार्मिक स्थापना के लिए विशेष सुविधाएं बहुसंख्यक समुदाय के साथ असमानता का आभास उत्पन्न करती हैं। यह प्रवृत्ति लंबे समय तक कांग्रेस और कुछ क्षेत्रीय दलों की रणनीतिक राजनीति का हिस्सा रही है। इसका परिणाम यह हुआ कि बहुसंख्यकों के अधिकारों और उनकी आस्था सम्बन्धी मुद्दों की अक्सर अवहेलना हुई, जिससे सामाजिक असंतुलन गहरा हुआ ।

इस प्रकार, भारत में सेक्युलर राजनीति यदि तुष्टिकरण के नाम पर केवल अल्पसंख्यकों के लाभ को केन्द्र में रखती है, तो यह मूल रूप से संविधान के समानता के सिद्धांत का उल्लंघन करती है। इसके कारण न केवल बहुसंख्यक समुदाय में असंतोष बढ़ सकता है, बल्कि राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता भी प्रभावित हो सकती है।

भारत में मुस्लिम जनसंख्या का बढ़ता अनुपात हाल के वर्षों में जनसांख्यिकीय और सामाजिक विमर्श का एक प्रमुख विषय बन गया है। 2025 तक के आकलन के अनुसार, देश की कुल जनसंख्या में मुस्लिम समुदाय की हिस्सेदारी लगभग 15 प्रतिशत के आसपास पहुंच चुकी है, जो कि पिछले दशक की तुलना में वृद्धि दर्शाती है। यह वृद्धि विशेष रूप से उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, असम, बिहार और केरल जैसे राज्यों में अधिक परिलक्षित होती है, जहां मुसलमान बड़े सामाजिक समूह के रूप में मौजूद हैं।

पश्चिम बंगाल के हालिया जनसांख्यिकीय अध्ययनों से पता चलता है कि हिंदू और मुस्लिम जनसंख्या के प्रतिशत में क्रमिक रूप से बदलाव हो रहा है। हिंदुओं की जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट दिख रही है, जबकि मुसलमानों की वृद्धि दर हल्का ऊपर की ओर है । मुस्लिम परिवारों में उच्च प्रजनन दर और युवा आबादी का अनुपात इनके जनसंख्या विस्तार में योगदान देता है। हालांकि, हाल के सरकारी कार्यक्रमों और शैक्षिक सुधारों ने इस प्रवृत्ति को धीमा करने की दिशा में प्रभावी कदम उठाए हैं। समग्र रूप से देखा जाए तो भारत में मुस्लिम जनसंख्या में वृद्धि एक प्राकृतिक और संक्रमणकालीन जनसांख्यिकीय प्रक्रिया है।

कुछ खुफिया विश्लेषणों के अनुसार, अवैध मुस्लिम प्रवासन के माध्यम से चरमपंथी नेटवर्क भी भारत में प्रवेश पाने का प्रयास कर चुके हैं। बांग्लादेश और म्यांमार से आने वाले रोहिंग्या शरणार्थियों को लेकर भारत की नीति इसलिए सख्त रखी गई है, क्योंकि सुरक्षा एजेंसियों ने उन्हें संभावित जिहादी नेटवर्क से जुड़ा खतरा बताया है सरकार ने इस समस्या से निपटने के लिए एनआरसी (National Register of Citizens) और सीएए (Citizenship Amendment Act) जैसे उपाय अपनाए हैं, जिनका उद्देश्य सीमा पार अवैध प्रवासन की पहचान और नियंत्रण है। साथ ही, सीमा प्रबंधन, स्मार्ट फेंसिंग, और डेटा-आधारित निगरानी प्रणालियों को सशक्त बनाया जा रहा है।

आज के समय में जरुरी है कि मुस्लिम प्रवासन को केवल धार्मिक नजरिए से नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, सामाजिक स्थिरता, और सांस्कृतिक एकता के सन्दर्भ में समझने की आवश्यकता है। अवैध प्रवासन की चुनौती अगर राजनीतिक हितों से ऊपर उठकर सामरिक दृष्टिकोण से सुलझाई जाए, तो यह भारत की दीर्घकालिक आंतरिक शांति और भू-राजनीतिक स्थिरता के लिए अत्यंत आवश्यक कदम सिद्ध होगा। ■

उत्सवों में प्रकृति पौराणिक परंपरा और लोकजीवन का संगम

नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर एवं ट्रेवलर

भारत में उत्सव केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं हैं वे प्रकृति, ऋतु, जल, वनस्पति और लोकजीवन के गहरे ताने-बाने से जुड़े हुए हैं। यहां हर पर्व एक कहानी कहता है कभी देवताओं की, कभी मनुष्य की, और कभी उस मिट्टी की जो जीवन देती है। कार्तिक मास के आगमन के साथ तो पूरे देश में भक्ति, उल्लास और रंगों का अद्भुत संगम देखने को मिलता है।

देवउठावनी एकादशी (1 नवम्बर) : शुभता का आरंभ : कहते हैं, जब भगवान विष्णु चार महीने के शयन के बाद देवउठावनी एकादशी को जागते हैं, तो पृथ्वी पर मंगल कार्यों की शुरुआत होती है। इस दिन कर्नाटक राज्योत्सव और केरल पिरवी (केरल दिवस) भी मनाया जाता है एक भारत, विविध संस्कृतियों की सुंदर झलक। देवउठावनी के अगले दिन, 2 नवम्बर को तुलसी विवाह का भव्य उत्सव होता है। तुलसी माता का घर दीपों से सजाया जाता है, और भगवान सालिग्राम की बारात नाचते-गाते तुलसी जी के आंगन में पहुंचती है। यह विवाह धार्मिक ही नहीं, लोक आनंद का भी प्रतीक है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि देवत्व केवल मंदिरों में नहीं पेड़, नदी, पौधे, हरियाली, सब में बसता है।

कार्तिक पूर्णिमा और देव दीपावली (5 नवम्बर) : कार्तिक मास की पूर्णिमा को त्रिपुरारी पूर्णिमा भी कहा जाता है यह वह दिन है जब भगवान शिव ने त्रिपुरासुर का संहार कर धर्म की पुनः स्थापना की थी। शास्त्रों में कहा गया है कि इस दिन गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, गंडक, कुरुक्षेत्र, अयोध्या और काशी जैसी पवित्र नदियों में स्नान करना अत्यंत पुण्यदायी होता है। इस दिन को देव दीपावली के रूप में मनाया जाता है मानो स्वयं देवता गंगा तट पर दीप जलाकर दीपावली मनाते हैं। घरों में रंगोली सजी होती है, और सरयू, गंगा, यमुना के घाटों पर दीपों की अनगिनत कतारें धरती पर स्वर्ग की छटा बिखेर देती हैं।

महाभारतकालीन कथा के अनुसार, युद्ध समाप्ति के बाद जब युधिष्ठिर युद्ध की विभीषिका से व्याकुल हुए, तो श्रीकृष्ण उन्हें और पांडवों को लेकर गढ़मुक्तेश्वर आए। वहां उन्होंने कार्तिक शुक्ल अष्टमी से चतुर्दशी तक गंगा तट पर यज्ञ किया और दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए दीपदान किया। आज भी वहां दीपदान और गंगा स्नान की परंपरा जीवित है। इसी दिन भारत के वीर शहीदों को भी श्रद्धांजलि दी जाती है – यह दिन धर्म, भक्ति और देशभक्ति का अद्भुत संगम है।

गुरु नानक जयंती (5 नवम्बर) : कार्तिक पूर्णिमा के ही दिन गुरु नानक देव जी का जन्मोत्सव मनाया जाता है। गुरुद्वारों में शबद कीर्तन की ध्वनि गूंजती है, और लंगर में सेवा का संदेश फैलता है। यह पर्व हमें सिखाता है 'सेवा ही सर्वोच्च साधना है।'

वन भोजन - प्रकृति संग समरसता का उत्सव : कार्तिक मास में 'वन भोजन' का आयोजन भी विशेष महत्व रखता है। गांव और शहरों के लोग किसी हरियाली भरे स्थान पर इकट्ठे होते हैं, घर का बना खाना लाते हैं और प्रकृति की गोद में बैठकर सब मिलजुलकर भोजन करते हैं। यहां कोई मंच नहीं, कोई औपचारिकता नहीं – जो गा सकता है, गाता है; जो सुना सकता है, सुनाता है। यह उत्सव हमें सिखाता है कि भोजन केवल पेट के लिए नहीं, आत्मीयता के लिए भी होता है।

गंगा महोत्सव, वाराणसी (5-7 नवम्बर) : वाराणसी की धरती पर गंगा आरती की लहरों के साथ गंगा महोत्सव का आयोजन होता है। यह तीन दिनों तक चलने वाला शास्त्रीय संगीत और नृत्य का उत्सव है जहां घाटों पर सितार, तबला, कथक और शंख की ध्वनि एक साथ गूंजती है। यह केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि गंगा माता के प्रति कृतज्ञता का उत्सव है।

पुष्कर ऊँट मेला (30 अक्तूबर-5 नवम्बर) : रेत के विशाल मैदानों में फैला पुष्कर मेला राजस्थान की आत्मा का उत्सव है। सैकड़ों ऊँट पारंपरिक पोशाकों में सजाए जाते हैं, ऊँट नृत्य करते हैं, प्रतियोगिताएँ होती हैं, और लोकनर्तक अपने गीतों से वातावरण जीवंत कर देते हैं।

कालबेलिया नृत्य की थिरकन अब विदेशों में भी गूंजती है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन लाखों श्रद्धालु पुष्कर झील में स्नान कर ब्रह्मा मंदिर में दर्शन करते हैं। रात को अलाव के चारों ओर लोकगाथाएं सुनाई जाती हैं मानो रेत में इतिहास फिर से जाग उठता हो।

बाली जात्रा, कटक - समुद्री विरासत का उत्सव : ओडिशा की धरती पर कटक के गडगड़िया घाट (महानदी तट) पर एशिया का सबसे बड़ा मेला – बाली यात्रा लगता है। यह उत्सव भारत के 2000 वर्ष पुराने समुद्री व्यापार की स्मृति में मनाया जाता है, जब ओड़िया नाविक 'साधवा' नावों

(बोइता) में जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, म्यांमार और श्रीलंका तक व्यापार करने जाते थे। परिवार की महिलाएं उनकी कुशल वापसी के लिए 'बोइता वंदना' करती थीं। कागज या केले के पत्तों से बनी नावों में दीप रखकर जल में प्रवाहित करती थीं। आज भी यह परंपरा हर घर, हर घाट पर निभाई जाती है। कटक का बाली यात्रा मेला सांस्कृतिक, व्यापारिक और लोकजीवन का अद्भुत संगम है। यहां लाखों लोग आते हैं हस्तशिल्प, लोककला, व्यंजन, चर्चा-मंडप और आधुनिक कार्यक्रम सब एक साथ। यहीं 2100 बच्चों ने 22,000 कागज की नाव बनाकर विश्व कीर्तिमान बनाया है जो गिनी बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज है।

झिड़ी मेला, जम्मू - किसान आस्था का पर्व : जम्मू से 22 किमी दूर झिड़ी गाँव में लगने वाला झिड़ी मेला उत्तर भारत का सबसे बड़ा किसान मेला है। यह बाबा जित्तो और उनकी पुत्री बुआ कौड़ी की स्मृति में आयोजित होता है, जिन्होंने अन्याय और शोषण के खिलाफ संघर्ष किया था। यहां खेती-बाड़ी, बागवानी, डेयरी, रेशम उद्योग, खादी और ग्रामीण तकनीक से जुड़े स्टॉल लगते हैं। श्रद्धालु बाबा तालाब में स्नान कर मनोकामना पूरी करने की कामना करते हैं। कहा जाता है कि उस जल में स्नान से त्वचा रोग दूर होते हैं और निसंतान को संतान सुख मिलता है। आज भी किसान अपने खेत के पहले अन्न के दाने बाबा जित्तो को अर्पित करते हैं उनके प्रति कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में।

रण उत्सव, कच्छ (1 नवम्बर-20 फरवरी) : गुजरात का प्रसिद्ध रण उत्सव सफेद रेगिस्तान में रंगों, संगीत और लोककला का तीन महीने लंबा उत्सव है। यहां कलाकार, बुनकर, संगीतकार, लोकनर्तक और कारीगर सब एक मंच पर आते हैं। रेत में सजे टेंट सिटी में जब सूरज ढ़लता है, तो पूरा रण मानो सोने की झिलमिल रोशनी में नहाता है। यह उत्सव भारत की विविधता और सृजनशीलता का सजीव प्रतीक है।

सोनपुर मेला, बिहार (6 नवम्बर-7 दिसम्बर) : गंडक नदी के तट पर लगने वाला सोनपुर मेला एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला है। यह वही स्थान है जहां चंद्रगुप्त मौर्य, अकबर और वीर कुँवर सिंह जैसे योद्धाओं ने हाथी खरीदे थे। आज यह मेला धीरे-धीरे अहटो एक्सपो और ग्रामीण व्यापारिक मेला बन गया है। यहां नौका दौड़, दंगल, सांस्कृतिक कार्यक्रम और हरिहरनाथ मंदिर की पूजा होती है। करीब 15 किमी तक फैले इस मेले में लोक संस्कृति और आधुनिकता का अद्भुत संगम देखने को मिलता है।

वंगाला उत्सव, मेघालय (7 नवम्बर) : मेघालय के गारो जनजाति द्वारा मनाया जाने वाला यह फसल कटाई का उत्सव है। 'वंगाला' का अर्थ है - 'सौ ढोल'। सूर्यदेव सलजोंग के सम्मान में ढोलों की गूंज और रंगीन वेशभूषा में पारंपरिक नृत्य होते हैं। यह उत्सव वर्षा और फसल दोनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है।

बूंदी महोत्सव, राजस्थान (18-20 नवम्बर) : राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र का छोटा पर ऐतिहासिक नगर बूंदी अपनी स्थापत्य कला, झरनों और मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। हनुमान मंदिर, राधाकृष्ण मंदिर और नीलकंठ महादेव की भक्ति के कारण इसे 'छोटी काशी' भी कहा जाता है। बूंदी महोत्सव में विविध प्रतियोगिताएं, सांस्कृतिक कार्यक्रम और लोकनृत्य होते हैं। चंबल नदी तट पर दीपदान का दृश्य मन को छू जाता है।

माजुली महोत्सव, असम (21-24 नवम्बर) : ब्रह्मपुत्र नदी के बीच स्थित माजुली द्वीप पर असम की सांस्कृतिक आत्मा झलकती है। संगीत, नृत्य और सत्र परंपरा का उत्सव मनाया जाता है, जो पूरे विश्व के संगीत प्रेमियों को आकर्षित करता है।

संगाई महोत्सव, मणिपुर (21 नवम्बर): राज्य के राजकीय पशु संगाई हिरण के नाम पर यह महोत्सव मणिपुर की संस्कृति, खेल, हस्तशिल्प और व्यंजनों का संगम है। यह न केवल पर्यटन आकर्षण है, बल्कि मणिपुर की संस्कृति-संरक्षा की पहल भी है।

विवाह पंचमी और श्रीराम-जानकी विवाह (25 नवम्बर) : मिथिला की परंपरा में विवाह केवल दो आत्माओं का मिलन नहीं, बल्कि प्रकृति और नदी पूजन से आरंभ होता है। विवाह पंचमी से पहले कमला नदी पूजन की रस्म होती है, जिसे 'मटकोर' कहते हैं। लोककथा है कि सीता जी की सखी कमला देवी इसी पूजन से प्रकट हुई थीं। इस अवसर पर स्त्रियां लोकगीत गाती हैं 'कहाँ माँ पियर माटी, कहाँ मटकोर रे...' पांच सुहागिनें तेल, हल्दी, दही लेकर नदी तट की मिट्टी खोदती हैं और वही मिट्टी विवाह के उबटन में मिलाई जाती है। विवाह पंचमी पर अयोध्या से श्रीराम की बारात जनकपुर (नेपाल) पहुंचती है। आज भी पांच वर्ष में एक बार यह यात्रा पुनः आयोजित होती है, जब अयोध्या से जनकपुर तक भक्ति का सागर उमड़ पड़ता है।

स्कंद षष्ठी (25 नवम्बर) : दक्षिण भारत में यह पर्व भगवान स्कंद (मुरुगन, कार्तिकेयन) को समर्पित है, जो भगवान शिव-पार्वती के पुत्र और गणेश जी के बड़े भाई हैं। छः दिनों तक उपवास और पूजा होती है, जो सूर्यसंहारम के दिन सम्पन्न होती है। अगले दिन तिरुकल्याणम का उत्सव मनाया जाता है। यह पर्व संतान-सुख और समृद्धि की कामना से मनाया जाता है। भारत के ये सभी उत्सव चाहे गंगा के घाटों पर जलते दीप हों या ओडिशा की नावों में झिलमिलाते दीपक एक ही संदेश देते हैं- प्रकृति, श्रद्धा और मानवता यही हमारे पर्वों का प्राण हैं। इनमें केवल आस्था नहीं, बल्कि जीवन का दर्शन छिपा है जहाँ नदी स्नान, दीपदान, गीत और नृत्य के साथ संस्कृति का प्रवाह निरंतर बहता रहता है। ■

रामबहादुर राय होने का अर्थ समझाती एक किताब

प्रो. संजय द्विवेदी
विभागाध्यक्ष, जनसंचार, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विवि. भोपाल

कई जनांदोलनों से जुड़े रहे, पदम भूषण और पद्मश्री सम्मानों से अलंकृत श्री रामबहादुर राय का समूचा जीवन रचना, सृजन और संघर्ष की यात्रा है। उनकी लंबी जीवन यात्रा में सबसे ज्यादा समय उन्होंने पत्रकार के रूप में गुजारा है। इसलिए वे संगठनकर्ता, आंदोलनकारी, संपूर्ण क्रांति के नायक के साथ-साथ महान पत्रकार हैं और लेखक भी। अपने समय के नायकों से निरंतर संवाद और साहचर्य ने उनके लेखन को समृद्ध किया है। हमारे समय में उनकी उपस्थिति ऐसे नायक की उपस्थिति है, जिसके सान्निध्य का सुख हमारे जीवन को शक्ति और लेखन को खुराक देता है। उनका समावेशी स्वभाव, मानवीय संवेदना से रसपगा व्यक्तित्व भीड़ में उन्हें अलग पहचान देता है। 'दिल्ली' में 'भारत' को जीने वाले बौद्धिक योद्धा के रूप में पूरा देश उन्हें देखता, सुनता और प्रेरणा लेता है। जिस दौर की पत्रकारिता की प्रामाणिकता और विश्वसनीयता पर ढेरों सवाल हों, ऐसे समय में रामबहादुर राय की उपस्थिति हमें आश्वस्त करती है कि सारा कुछ खत्म नहीं हुआ है। सही मायने में उनकी मौजूदगी हिन्दी पत्रकारिता की उस परंपरा की याद दिलाती है, जो बाबूराव विष्णुराव पराड़कर से होती हुई राजेन्द्र माथुर और प्रभाष जोशी तक जाती है।

4 फरवरी, 1946 को उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के एक गांव में जन्में श्री राय सही मायने में पत्रकारिता क्षेत्र में शुचिता और पवित्रता के जीवंत उदाहरण हैं। वे एक अध्येता, लेखक, दृष्टि संपन्न संपादक, मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध पत्रकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में प्रेरक छवि रखते हैं। भारतीय जीवन मूल्यों और पत्रकारिता के उच्च आदर्शों को जीवन में उतारने वाले रामबहादुर राय ने राजनीति के शिखर पुरुषों से रिश्तों के बावजूद कभी कलम को ठिठकने नहीं दिया। उन्होंने वही लिखा और कहा जो उन्हें सच लगा। राय साहब काशी हिन्दू

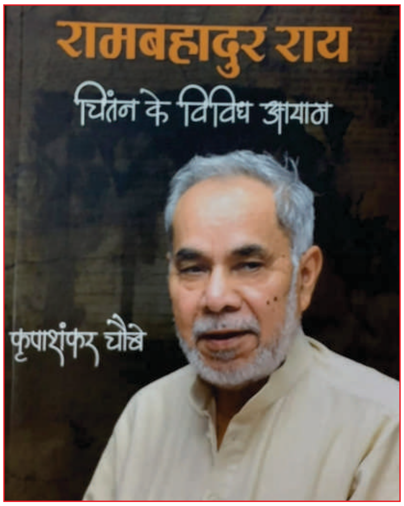

विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त कर छात्र राजनीति में सक्रिय रहते हुए, ऐतिहासिक जयप्रकाश आंदोलन के नायकों में रहे। दैनिक 'आज' में बांग्लादेश मुक्ति संग्राम का आंखों देखा वर्णन लिखकर आपने अपनी पत्रकारीय पारी की एक सार्थक शुरुआत की। युगवार्ता फीचर सेवा, हिन्दुस्तान समाचार संवाद समिति में कार्य करने के बाद आप 'जनसत्ता' से जुड़ गए। जनसत्ता में एक संवाददाता के रूप में कार्य प्रारंभ कर वे उसी संस्थान में मुख्य संवाददाता, समाचार ब्यूरो प्रमुख, संपादक, जनसत्ता समाचार सेवा के पदों पर रहे। आप नवभारत टाइम्स, दिल्ली में विशेष संवाददाता भी रहे। आप देश की अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं जिनमें प्रज्ञा संस्थान, युगवार्ता ट्रस्ट, दशमेश एजुकेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट, इंडियन नेशनल कमीशन फॉर यूनेस्को, प्रभाष परंपरा न्यास, भानुप्रताप शुक्ल न्यास के नाम प्रमुख हैं।

आपकी चर्चित किताबों में आजादी के बाद का भारत झांकता है। ये किताबें राजनीति शास्त्र और समाजशास्त्र की मूल्यवान किताबें हैं। जिनमें भारतीय संविधानः एक अनकही कहानी, रहबरी के सवाल (पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर की जीवनी), मंजिल से ज्यादा सफर (पूर्व प्रधानमंत्री वीपी सिंह की जीवनी), काली खबरों की कहानी (पेड न्यूज पर केंद्रित), भानुप्रताप शुक्ल- व्यक्तित्व और विचार प्रमुख हैं। भारतीय पत्रकारिता की उजली परंपरा के नायक के रूप में रामबहादुर राय आज भी निराश नहीं हैं, बदलाव और परिवर्तन की चेतना उनमें आज भी जिंदा है। स्वास्थ्यगत समस्याओं के बावजूद आयु के इस मोड़ पर भी वे उतने ही तरोताजा हैं।

पत्रकारिता के इस अनूठे नायक पर प्रो. कृपाशंकर चौबे की नई किताब 'रामबहादुर राय : चिंतन के विविध आयाम' (प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग, गाजियाबाद द्वारा प्रकाशित) उनके अवदान को अच्छी तरह से रेखांकित करती है। एक पत्रकार, संपादक, सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में बहुज्ञात राय साहब को इस तरह देखना निश्चित ही कृपा जी की उपलब्धि है। उनकी यह किताब राय साहब के संपूर्ण रचनाधर्मी स्वभाव का जिस तरह मूल्यांकन करती है, वह अप्रतिम है। किताब में उनका व्यक्तित्व, उनकी किताबें, उनके रिश्ते और रचना कर्म दिखता है। इस तरह यह किताब उन्हें जानने का सबसे बेहतरीन जरिया है। क्योंकि रामबहादुर राय जैसे बहुआयामी व्यक्तित्व को आप उनकी किसी एक किताब, एक मुलाकात, एक व्याख्यान से नहीं समझ सकते। किंतु यह किताब बड़ी सरलता से उनके बारे में सब कुछ कह देती है। किताब में अंत में छपा उनका साक्षात्कार तो अद्भुत है, एक यात्रा की तरह और फीचर का सुख देता हुआ। संवाद ऐसा कि चित्र और

दृश्य साकार हो जाएं। रामबहादुर राय से यह सब कुछ कहलवा लेना लेखक के बूते ही बात है। यह किताब एक बड़ी कहानी की तरह धीरे-धीरे खुलती है और मन में उतरती चली जाती है। किताब एक बैठक में उपन्यास का आस्वाद देती है, तो पाठ-दर पाठ पढ़ने पर कहानी का सुख देती है। यह एक पत्रकार की ही शैली हो सकती है कि इतने गूढ़ विषय पर इतनी सरलता से, सहजता से संचार कर सके। संचार की सहजता ही इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता है।

किताब की सबसे बड़ी विशेषता इसकी समग्रता है। वह बताती है कि किसी खास व्यक्ति का मूल्यांकन किस तरह किया जाना चाहिए। हिंदी पत्रकारिता में आलोचना की परंपरा बहुत समृद्ध नहीं है। इसका कारण यह है कि साहित्यिक आलोचना में सक्रिय लोग पत्रकारिता को बहुत गंभीरता से नहीं लेते, मीडिया अध्ययन संस्थानों में भी पत्रकारों के काम पर शोध का अभ्यास नहीं है। ऐसे में यह किताब हमें पत्रकारीय व्यक्तित्व की आलोचना का पाठ भी सिखाती है। 11 अध्यायों में फैली इस किताब का हर अध्याय समग्रता लिए हुए है। हमारे बीते दिनों की यात्राएं, आजादी के बाद एक बनते हुए देश की चिंताएं, सरकारों की आवाजाही, हमारे नायकों की मनोदशा सबकुछ। पहले अध्याय में संघर्ष और सरोकार के तहत उनके बचपन, स्कूली शिक्षा, कालेज जीवन, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में उनकी सक्रियता, संघर्ष, जेल यात्रा सब कुछ जीवंत हो उठा है। उनके आंदोलनकारी और छात्र राजनीति के पक्ष को यहां समझा जा सकता है। जयप्रकाश नारायण से उनका रिश्ता कैसे उन्हें रूपांतरित करता है, कैसे वे आंदोलन के मार्ग से लोकजागरण के लिए पत्रकारिता के मार्ग पर आते हैं, इसे पढ़ना सुख देता है।

अध्याय दो में 'प्रश्नोत्तर शैली में पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर की जीवनी' शीर्षक अध्याय में राय साहब की किताब 'रहबरी के सवाल' की चर्चा है। चंद्रशेखर जी के साथ संवाद से बनी यह किताब राजनीति, समाज और समय के संदर्भों की अनोखी व्याख्या है। जहां संवाद एक तरह के शिक्षण में बदल जाता है। पुस्तक में एक भाषण में भारत को पारिभाषित करते हुए चंद्रशेखर जी कहते हैं- "भारत सिर्फ मिट्टी का नाम नहीं है। कुछ नदियों और पहाड़ों का समुच्चय नहीं है। भारत सत्य, एक सतत, शास्वत गवेषणा का नाम है। सत्य की इस धारा से दुनिया बार-बार आलोकित होती रही है।"

अध्याय तीन में पूर्व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की जीवनी (मंजिल से ज्यादा सफर) भी संवाद शैली में ही लिखी गयी है। इस स्तर के राजनेताओं के अनुभव निश्चय ही हमें समृद्ध करते हैं। क्योंकि वे आजादी के बाद के भारत की राजनीति, संसद और समाज की गहरी समझ लेकर आते हैं। पत्रकार राय साहब इस तरह समाज विज्ञानियों और राजनीति शास्त्रियों के लिए मौलिक पाठ रचते नजर आते हैं। इस किताब की भूमिका में यशस्वी संपादक प्रभाष जोशी लिखते हैं -"रामबहादुर राय देश के एक बहुत विश्वसनीय और प्रामाणिक पत्रकार हैं। यह जल्दी में काता-कूता कपास नहीं है। बड़े जतन से बुनी गयी चादर है।"

अध्याय चार और पांच महान समाजवादी चिंतक और राजनेता जेबी कृपलानी और जयप्रकाश नारायण को समझने में मदद करते हैं। अध्याय छह में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक रहे बालासाहब देवरस की विचार दृष्टि पर चर्चा है। यह पाठ 'हमारे बालासाहब देवरस' नामक पुस्तक पर केंद्रित है जिसका संपादन राय साहब और राजीव गुप्ता ने किया था। अध्याय सात में गोविंदाचार्य पर संपादित किताब की चर्चा है। गोविंदाचार्य के बहाने यह किताब राजनीति की लोक संस्कृति पर विमर्श खड़ा करती है। अध्याय आठ में पड़ताल शीर्षक से छपे उनके स्तंभ का विश्वेषण है। इस स्तंभ पर केंद्रित चार पुस्तकें अरुण भारद्वाज के संपादन में प्रकाशित हुई हैं। जिनका प्रो. कृपाशंकर चौबे ने नीर-क्षीर विवेचन किया है। अध्याय- नौ में राय साहब की बहुचर्चित किताब 'भारतीय संविधान- एक अनकही कहानी' की चर्चा है। इस किताब में संविधान सभा की बहसें हमारे सामने चलचित्र की तरह चलती हैं। बहुत मर्यादित और गरिमामय टिप्पणियों के साथ। शायद लेखक चाहते हैं कि उनके पाठक भी वही भाव और स्पंदन महसूस कर सकें, जिसे संविधान सभा में उपस्थित महापुरुषों ने उस समय महसूस किया होगा। रामबहादुर जी की कलम उस ताप को ठीक से महसूस और व्यक्त करती है। जैसे राजेंद्र प्रसाद जी को संविधान सभा का स्थायी अध्यक्ष बनाते समय श्री सच्चिदानंद सिन्हा और अंत में बोलने वाली भारत कोकिला सरोजनी नायडू जी के वक्तव्य को पढ़ते हुए होता है। अध्याय-10 में राय साहब के निबंधों की चर्चा है। अध्याय-11 में राय साहब से कृपाशंकर जी का संवाद अद्‌भुत है। उसे पढ़ना पत्रकारिता में उनके अनुभवों के साथ बहुत सी बातें सामने आती हैं। खासकर नवभारत टाइम्स के संपादक राजेंद्र माथुर की मृत्यु के कारणों पर उन्होंने जो कहा वह बहुत साहसिक है। यह वही समय है जब हमारी पत्रकारिता से संपादक के विस्थापन और कारपोरेट के पंजों की पकड़ मजबूत हो रही है।

अपनी आधी सदी की पत्रकारिता में रामबहादुर राय ने जिन आदर्शों और लोकधर्म का पालन किया है, यह किताब उनके जीवन मूल्यों को लोक तक लाने में सफल रही है। इस बहाने उनके जीवन, कृतित्व और सरोकारों से परिचित होने का मौका यह पुस्तक दे रही है। लेखक को इस शानदार किताब के लिए बधाई। राय साहब के लिए प्रार्थनाएं कि वे शतायु हों। ■

श्री रामबहादुर राय का समूचा जीवन रचना, सृजन और संघर्ष की यात्रा है। उनकी लंबी जीवन यात्रा में सबसे ज्यादा समय उन्होंने पत्रकार के रूप में गुजारा है। इसलिए वे संगठनकर्ता, आंदोलनकारी, संपूर्ण क्रांति के नायक के साथ-साथ महान पत्रकार हैं और लेखक भी। अपने समय के नायकों से निरंतर संवाद और साहचर्य ने उनके लेखन को समृद्ध किया है।

2025 के नोबेल पुरस्कार खोज, साहस और मानवता का संगम

अक्टूबर का महीना हर साल दुनिया के लिए खास होता है। स्टॉकहोम और ओस्लो में नोबेल पुरस्कार विजेताओं की घोषणा होती है, और 2025 में ये पुरस्कार उन वैज्ञानिकों, लेखकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं की ओर ध्यान खींचते हैं जिन्होंने हमारी दुनिया के सबसे जटिल सवालों पर काम किया है। यह केवल अतीत की उपलब्धियों का सम्मान नहीं है, बल्कि यह संकेत है कि आने वाले समय में क्या मायने रखेगा।

इम्यूनिटी का रहस्य : इस साल फिजियोलॉजी या मेडिसिन में मैरी ई. ब्रुनको, फ्रेड राम्सडेल और शिमोन साकागुची को सम्मानित किया गया। इनका शोध regulatory T cells पर आधारित है- इम्यून सिस्टम के वो 'ब्रेक' जो शरीर को खुद पर हमला करने से रोकते हैं। FOXP3 जीन की खोज और peripheral immune tolerance की समझ ने ऑटोइम्यून रोगों, कैंसर और इम्यूनोथेरपी में नए रास्ते खोल दिए हैं। आज, जब स्वास्थ्य खतरों में संक्रमण और इम्यून गड़बड़ी शामिल हैं, उनके काम की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है।

क्वांटम की छलांग : भौतिकी में जॉन क्लार्क, मिशेल एच. डेवोरेट और जॉन एम. मार्टिनिस ने यह साबित किया कि क्वांटम घटनाएँ अब बड़े पैमाने पर नियंत्रित की जा सकती हैं। इसका सीधा असर क्वांटम कंप्यूटिंग, अल्ट्रा-प्रिसाइज सेंसर और क्वांटम संचार जैसी तकनीकों पर पड़ रहा है। यह पुरस्कार दिखाता है कि विज्ञान अब केवल प्रयोगशाला तक सीमित नहीं, बल्कि हमारी रोजमर्रा की तकनीक का आधार बन रहा है।

संसाधनों की नई दिशा : रसायन विज्ञान में जापान, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका के शोधकर्ताओं - सुसुमु कितागावा, रिचर्ड रॉबसन और उमर एम. याघी - को मेटल-ऑर्गेनिक फ्रेमवर्क (MOFs) के लिए नोबेल पुरस्कार मिला। MOFs छिद्रयुक्त आणविक ढांचे हैं, जो गैस पकड़ सकते हैं, प्रदूषकों को अलग कर सकते हैं और हवा से पानी निकाल सकते हैं। जलवायु परिवर्तन और संसाधन संकट के समय, यह खोज केवल प्रयोगशाला तक सीमित नहीं, बल्कि समाधान की दिशा भी दिखाती है।

अंधकार में शब्द : साहित्य का नोबेल पुरस्कार हंगरी के लास्जलो क्रास्जनाहोरकाई को दिया गया। उनके लंबे और जटिल वाक्य आधुनिक जीवन की भयावहता, संस्थागत ढहावट और अस्तित्वगत चिंता को उजागर करते हैं। यह पुरस्कार याद दिलाता है कि तकनीकी प्रगति के बावजूद साहित्य और मानवीय अनुभव की खोज की अहमियत बनी रहती है।

लोकतंत्र पर संकट और साहस : शांति पुरस्कार इस साल वेनेजुएला की विपक्षी नेता मारिया कोरिना माचाडो को मिला। उन्होंने लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा के लिए तानाशाही के खिलाफ संघर्ष किया। 58 वर्ष की आयु में, वे नागरिक साहस की मिसाल बन गई हैं। यह पुरस्कार दिखाता है कि लोकतंत्र की रक्षा और नागरिकों का साहस हमेशा प्रासंगिक हैं। ■

सास-बहू के प्रेम ने दिखाया 'एकात्म परिवार' का सजीव उदाहरण

एटा जिले का एक छोटा-सा गांव इन दिनों पूरे प्रदेश के लिए प्रेरणा बन गया है। यहां के अश्विनी प्रताप सिंह के परिवार ने यह सिद्ध कर दिया कि परिवार ही जीवन की असली शक्ति है। जब रिश्तों में प्रेम, त्याग और एकता हो तो कोई भी कठिनाई असंभव नहीं रहती। फर्रूखाबाद की पूजा की शादी नवंबर 2023 में एटा निवासी अश्विनी प्रताप सिंह से हुई थी। विवाह के कुछ ही महीनों बाद जब बेटी के जन्म के समय पूजा गंभीर संक्रमण से जूझने लगी, तो पूरे परिवार की जिंदगी जैसे थम-सी गई। संक्रमण इतना बढ़ा कि पूजा की दोनों किडनियां 75 प्रतिशत तक खराब हो गईं। कई अस्पतालों के चक्कर लगाने के बाद डॉक्टरों ने कहा कि अब एक ही रास्ता बचा है किडनी ट्रांसप्लांट। इसी संकट की घड़ी में परिवार का असली स्वरूप सामने आया। सास बीनम देवी ने बिना एक पल सोचे कहा 'अगर मेरी किडनी मैच हो गई तो मैं अपनी बहू को दूंगी।'

डॉक्टरों ने जांच की और चमत्कार हुआ ब्लड ग्रुप मैच कर गया। 13 सितंबर को बीनम देवी ने ऑपरेशन टेबल पर जाकर अपनी किडनी बहू पूजा को दान कर दी। यह सिर्फ एक चिकित्सकीय प्रक्रिया नहीं थी, यह परिवार के धर्म और त्याग की परंपरा का जीवंत उदाहरण था। सर्जरी सफल रही। जब पूजा स्वस्थ होकर अपनी नवजात बेटी को गोद में लेकर मुस्कुराई, तो उसकी आँखों से कृतज्ञता के आँसू छलक पड़े। उसने कहा, 'मेरी मां ने तो किडनी देने से मना कर दिया था, लेकिन मेरी सास ने बिना झिझक अपनी जान दांव पर लगा दी। उनके कारण ही मैं आज जीवित हूं और अपनी बेटी को देख पा रही हूं।' पति अश्विनी ने गर्व से कहा, 'मां ने साबित किया कि सास-बहू का रिश्ता केवल कहावतों का विषय नहीं, यह ममता और समर्पण का रिश्ता भी है।' जब बीनम देवी और पूजा एक महीने बाद गांव लौटीं, तो पूरा गांव भावविभोर हो उठा। लोगों ने फूल बरसाकर उनका स्वागत किया, मिठाइयां बांटी गईं और हर घर में एक ही चर्चा थी कि सास ने रिश्तों की परिभाषा बदल देती है। यह सिर्फ एक परिवार की खुशी नहीं थी, अपितु समाज के सामने परिवार की एकता का आदर्श संदेश था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का 'कुटुंब प्रबोधन' प्रकल्प वर्षों से यही सिखाता है कि परिवार ही राष्ट्र की मूल इकाई है। जब परिवार सशक्त होता है, तभी समाज और राष्ट्र मजबूत बनता है।

बीनम देवी और पूजा की यह कथा उस सिद्धांत का साक्षात् रूप है जहां परिवार में संस्कार, सहानुभूति और एकात्मता है, वहां कोई भी संकट बड़ा नहीं होता। बीनम देवी ने यह साबित कर दिया कि परिवार केवल रक्त-संबंधों से नहीं बनता अपितु प्रेम, त्याग और परस्पर विश्वास से बनता है। उनका यह कदम बताता है कि अगर हर घर में ऐसे मूल्य जीवित रहें तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' केवल शास्त्र का वाक्य नहीं, बल्कि जीवन का सत्य बन जाएगा।

तरुणा ने कुमाऊं की परंपरा को दिया मॉडर्न टच, विदेशों तक चमक उठे पहाड़ के गहने

कहते हैं कि अगर इरादे मजबूत हों तो राह खुद-ब-खुद निकल आती है। इसका जीता-जागता उदाहरण हैं नैनीताल की तरुणा, जिन्होंने फैशन डिजाइनिंग की पढ़ाई करने के बाद महानगरों की चकाचौंध छोड़ अपने पहाड़ लौटने का फैसला किया। उनका लक्ष्य था कुमाऊं की पारंपरिक ज्वेलरी को आधुनिक रूप देना और दुनिया तक पहुंचाना। कुमाऊं के पारंपरिक गहनों नथ, गलोबंद, हंसुली, चंपाकली और पोंछी की अपनी अलग पहचान रही है, लेकिन समय के साथ ये गहने युवाओं से दूर होते चले गए। उन्हें यह पुराने जमाने की निशानी लगते थे। तरुणा ने इस कमी को पहचाना और पारंपरिक डिजाइनों में मॉडर्न टच जोड़ना शुरू किया। आज उनके बनाए डिजाइन सोने, चांदी, ब्रॉस और नए मटीरियल्स से तैयार होकर न सिर्फ युवाओं अपितु विदेशों में भी पसंद किए जा रहे हैं। दिल्ली, मुंबई, बैंगलोर जैसे महानगरों से लेकर ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और सिंगापुर तक, तरुणा की ज्वेलरी की मांग लगातार बढ़ रही है।

तरुणा पिछले 25 सालों से ज्वेलरी डिजाइनिंग से जुड़ी हुई हैं। उन्होंने कई बड़े ब्रांड्स के साथ भी काम किया, लेकिन दिल हमेशा अपने पहाड़ और संस्कृति के लिए धड़कता रहा। यही वजह रही कि उन्होंने नैनीताल लौटकर 'म्यार' (कुमाऊंनी भाषा में 'मेरा') नाम से अपना ब्रांड शुरू किया। आज उनकी डिजाइनों में पारंपरिक सौंदर्य और आधुनिकता का अनोखा संगम देखने को मिलता है। खासकर बच्चों के लिए डिजाइन की गई भौ पौछी (हाथ में पहना जाने वाला आभूषण) लोगों को बेहद पसंद आ रही है। यह कहानी सिर्फ एक महिला उद्यमी की सफलता नहीं, बल्कि उस सोच की मिसाल है कि अगर परंपरा को आधुनिकता से जोड़ा जाए, तो वह न सिर्फ हमारी पहचान को बचा सकती है, बल्कि दुनियाभर में हमारी संस्कृति का परचम भी लहरा सकती है। ■

अमरूद से आम किसान भी बन सकता है लखपति!

वाराणसी, उत्तर प्रदेश : गांव की वही मिट्टी, वही खेत फर्क सिर्फ इतना कि एक किसान ने दिमाग लगाया और अमरूद को बना दिया लाखों रुपये कमाने का जरिया। वाराणसी के भाव गाँव के एमए पास शैलेंद्र सिंह ने शहर की नौकरी छोड़ खेती चुनी और आज उनकी अमरूद की बगिया हर साल 50-60 लाख रुपये उगल रही है। यह कमाई किसी बड़े बिजनेस से कम नहीं, बल्कि उससे भी आसान और पक्का रास्ता है, जिसे हर आम किसान अपना सकता है। साल 2006 में पढ़ाई खत्म करने के बाद शैलेंद्र ने ठान लिया कि नौकरी नहीं, बल्कि खेती करेंगे। उन्होंने लखनऊ के केंद्रीय बागवानी संस्थान से अमरूद की बेहतरीन किस्मों के पौधे लाए और शुरुआत कर दी। धीरे-धीरे 14 एकड़ में 14 किस्मों के अमरूद लगा दिए। यहां तक कि बीच की खाली जमीन में हल्दी, अदरक और सूरन जैसी फसलें भी बोईं ताकि शुरुआती सालों में भी आय बनी रहे। अमरूद साल में तीन बार फल देता है और ज्यादा देखभाल या पानी की जरूरत नहीं होती। यही इसकी सबसे बड़ी खूबी है। एक पेड़ से 40-50 किलो तक फल निकल आता है। शैलेंद्र अमरूद बेचकर ही हर साल करीब 35 लाख रुपये कमा लेते हैं। इसके अलावा उन्होंने पत्तियों को भी बेचना शुरू किया। बेंगलुरु की कंपनियां इन्हें 40 रुपये किलो में खरीदती हैं और उनसे हर्बल दवाइयां व ब्यूटी प्रोडक्ट बनते हैं। यानी जिस चीज को किसान पहले बेकार मानकर फेंक देते थे, वही अब पैसे बरसा रही है। 2011 में शैलेंद्र ने पॉलीहाउस बनाकर अमरूद की नर्सरी शुरू की। अब देशभर के किसान उनसे पौधे खरीदते हैं। सिर्फ पौधों और पत्तियों से ही 15-20 लाख रुपये सालाना की कमाई हो रही है। इतना ही नहीं, वह महीने में दो बार ट्रेनिंग प्रोग्राम भी कराते हैं, जिसमें किसान आकर सीखते हैं कि खेती को बिजनेस कैसे बनाया जाए। अगर किसी किसान के पास सिर्फ 1 एकड़ जमीन है तो वह उसमें लगभग 700 पौधे लगा सकता है। तीन साल बाद वही खेत सालाना डेढ़ से ढाई लाख रुपये का मुनाफा देगा। और अगर कोई 5 एकड़ लगाए तो समझिए लाखों की गारंटी पक्की। खास बात यह है कि अमरूद की खेती में जोखिम बहुत कम है और मेहनत का सीधा-सीधा फायदा मिलता है। ■

झोपड़ी से जापान तक : 12 वीं की स्टूडेंट पूजा पाल ने रचा कमाल

गरीबी की झोपड़ी में पली-बढ़ी बाराबंकी की बेटी पूजा पाल आज पूरे देश की पहचान बन चुकी है। खेतों में धूल से जूझती इस मासूम छात्रा ने अपनी मेधा और संकल्प से ऐसा थ्रेशर मॉडल बनाया, जिसने न केवल शिक्षकों और वैज्ञानिकों को चौंकाया अपितु प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की डॉक्यूमेंट्री 'कर्मयोग : एक अंतहीन यात्रा' तक जगह बना ली। आज वही पूजा मिशन शक्ति 5.0 की रोल मॉडल है और हजारों बेटियों के लिए जीती-जागती प्रेरणा। पिता राजगीर मजदूर, मां विद्यालय की रसोइयां और घर झोपड़ी का। घर में बिजली तक नहीं थी लेकिन पूजा के सपने जगमगा रहे थे। बैटरी और मोमबत्ती की रोशनी में पढ़ने वाली इस बेटी ने दिखा दिया कि कठिनाइयां कभी भी प्रतिभा की उड़ान को रोक नहीं सकतीं। साल 2020 में गेहूं की कटाई के दौरान थ्रेशर से उड़ती धूल ने उसे परेशान किया। आँखों में जलन, सांस में तकलीफ और वहीं से उसने ठान लिया कि इस समस्या का हल ढूँढना ही है। कबाड़ इकट्ठा किया, थोड़ी सामग्री खरीदी और गढ़ दिया धूल-मुक्त थ्रेशर मॉडल। इस मॉडल ने पहले जिले और मंडल में बाजी मारी, फिर उत्तर प्रदेश के टॉप 10 मॉडलों में जगह बनाई। राज्य स्तर पर गूँज उठा और दिल्ली के इंदिरा गांधी स्टेडियम में आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में जब पूरे देश के 441 मॉडलों में से केवल 60 चुने गए, तो पूजा का मॉडल उनमें चमक उठा। यही नहीं, इस उपलब्धि ने उसे जापान तक पहुंचा दिया, जहां उसने वैज्ञानिकों से नई तकनीकें सीखीं। जापान से लौटकर पूजा का भव्य स्वागत हुआ। राज्यमंत्री सतीश शर्मा ने उसके घर पहुंचकर सम्मानित किया और बिजली की सुविधा दिलाई। अब उसे आवास भी स्वीकृत हो चुका है। एक झोपड़ी में पली-बढ़ी लड़की, आज सरकारी सम्मान और अंतरराष्ट्रीय पहचान की हकदार है। आज पूजा 12वीं की छात्रा है और आगे विज्ञान की दुनिया में बीएससी कर अपनी पहचान बनाना चाहती है। उसका थ्रेशर मॉडल पेटेंट की प्रक्रिया में है, जो किसानों को धूल-मुक्त भूसा देगा और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से बचाएगा। यानी, पूजा की बुद्धिमत्ता केवल उसकी कहानी नहीं, बल्कि किसानों के लिए वरदान बनने वाली है। ■

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का बीजारोपण

श्री विजयादशमी, 27 सितम्बर 1925

RNI No. : UPHIN/2023/84344
Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2023-24-25

NIRALA WORLD

Nirala Gateway

Sector 12, Greater Noida (W).

RETAIL

OFFICE

STUDIO APARTMENTS

Project Id: (UPRERAPRJ531916/06/2025)
Registration Date: 17-06-2025
Promoter Name: Parth Builtech Private Limited
Promoter Id: (UPRERAPRM348231)
Website: https://www.up-rera.in/projects